चटक म्हारा चम्पा

बालकवि बैरागी

चटक म्हारा चम्पा

—बालकवि बैरागी

दादा श्री नरेन्द्रसिंह तोमर
को सादर सविनय
सर्मपित

—बालकवि बैरागी

चटक म्हारा चम्पा

(मालवी गीतों का संग्रह)

बालकवि बैरागी
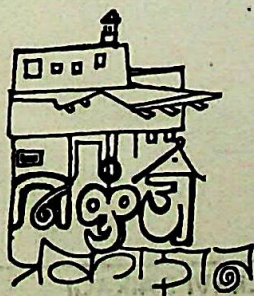
निकुंज प्रकाशन, उज्जैन (म०प्र०)

मूल्य २० रुपये

चटक म्हारा चम्पा

बालकवि बैरागी

निकुंज प्रकाशन १९८३

४, हाउसिंग शॉप, शास्त्रीनगर, उज्जैन.

चित्रांकन: डॉ विष्णु भटनागर

मुद्रक:—विद्या ट्रेडर्स, उज्जैन,

CHATAK MHARA CHAMPA—BALKAVI BAIRAGI

(भूमिका)

देसिल बअना सब जन मिट्ठा

शब्द हमारी वाणी के वाहक हैं, वहीं मानव-हृदय की अपार भाव-सम्पदा का प्रतिनिधित्व करने वाली भाषा और राजदूत भी हैं। व्याकरण शब्दों को अनुशासन में बाँधने का प्रयास अवश्य करता है किन्तु शब्दों की स्वच्छन्द प्रकृति एक सीमित अर्थ-सत्ता के बन्धन को स्वीकारने को तैयार नहीं होती। अनेक लोकभाषा और बोलियों के शब्दों में विभिन्न भावलहरियों एवं मनस्थितियों की ऐसी झांकी देखने को मिलती है, जो किसी शब्दकोश की रूढ़ और निर्धारित परम्परा से एकदम भिन्न होती है। एक कुशल शब्द-शिल्पी, कवि की काव्य-भाषा के सन्दर्भ में तो उक्त धारणा को बल मिलेगा।

बालकवि बैरागी के इस काव्य-संकलन की भाषा मालवी है। मालवी पर भाषा—वैज्ञानिक दृष्टि से काफी लिखा जा चुका है। मालवा की उत्पत्ति एवं स्वरूप पर यहां विस्तृत चर्चा करना अनावश्यक हैं, केवल कवि की भाषा विषयक मान्यताओं का विवेचन तथा उनकी काव्य-भाषा मालवी पर विचार करना ही वांछनीय है। 'मालवी' के विषय में कवि के अपने विचार हैं— (i) वैसे भी मालवी बोली के निर्माण में छ: भाषाओं का योगदान माना जाता है। इसमें राजस्थानी, गुजराती, हिन्दी, मराठी, पंजाबी और उर्दू के शब्द आपको आसानी से मिल जायेंगे। मेरी माल वी को आप 'मन्दसौरी मालवी' भी कह सकते हैं। यह मालवी का एक उपभेद हुआ। रतलाम की तरफ मालवी की मुख्य धारा का आँचल इसका सिर पैर रहा है।

उक्त दोनों प्रकार की भ्रान्तियों पर भी पर्याप्त विचार हुआ है। स्थान-विशेष एवं जातियों को लेकर मालव जैसे विस्तृत एवं विभिन्न संस्कृतियो से युक्त प्रदेश में भाषा के अनेक भेद और उपभेद माने जा सकते हैं। ग्राम और नगर, स्त्री और पुरुष, शिक्षित और अशिक्षित की बोली में कुछ भेद या अन्तर तो मिल जाता है किन्तु एक सीमित क्षेत्र में बसने वाली विभिन्न जातियों के आधार पर बोली के अनेक भेदोपभेदों की कल्पना कर लेने में न तो कोई तथ्य है और न भाषा-विज्ञान की दृष्टि से उनका सबल आधार ही है।

डॉ. श्याम परमार ने मन्दसौर, रतलाम आदि स्थानों के नाम पर मालवी के भेदों में 'मन्दसौरी', 'रतलामी' आदि नामकरण किये हैं। वस्तुतः रतलाम और मन्दसौर क्षेत्र की बोली में कोई अन्तर नहीं है। मन्दसौर जिले के अन्तर्गत सौंधवाड़ का कुछ क्षेत्र सम्मिलित हैं। मन्दसौर जिले के पूर्वी क्षेत्र की ग्रामीण जनता की बोली की दृष्टि भे मन्दसौर की वोली और सौंधवाड़ी में भी पर्याप्त समानता हैं। सौंधवाड़ी मालवी का एक प्रमुख उपभेद है। वालकवि की मालवी भाषा को 'रजवाड़ी' के अन्तर्गत माना जायेगा। हां, यदि उनकी भाषा को हम 'रांगड़ी' कहें तो वे आपत्ति कर सकते हैं। स्वभाव और संस्कार से वे न तो रांगड़ हैं और न उनकी भाषा रांगड़ी। भले ही प्रसिद्ध भाषाशास्त्री डॉ. गियर्सन ने रजवाड़ी या रांगड़ी कहकर जन-प्रवाह से वचने की चेष्टा की हो।

काव्य लेखन में भावों की पकड़ के साथ, उनको प्रकट करने की कला का सर्वाधिक महत्व होता है। वालकवि बैरागी इस मामले में बेजोड़ हैं। शव्द चयन में उनकी मालवी का सौन्दर्य और भाव-बोध की कला को स्पष्ट देखा जा सका है—

'आम्वा लगईग्यो ने हाँटा उगईग्यो
काँटा का नखल्या तोड़ीग्यो
भूखा ने धाणी गूंगा ने वाणी
देई ने हठीलो पौढ़ी ग्यो'

'हारया ने हिम्मत' शीर्षक कविता का अंश है—आम के वृक्ष को जिसने लगाया, गन्ने को जिसने उगाया काँटों के नखों को जिसने तोड़ा, जिसने भूखों को भोजन और गूंगे लोगों को वाणी दी। निष्ठा और आग्रहपूर्वक ऐसे काम करने वाला व्यक्ति अन्नत की गोद में सो गया। यह जवाहरलाल जी की मृत्यु पर प्रकट की गई भावाभिव्यक्ति है।

सौन्दर्य से अभिभूत होने के लिए—"नैण वणी का घणा हत्यारा"

आनन्दभाव की अतिशयता को प्रकट करने के लिये—

अंगणा म्हारे रोज वटे रे पतासाँ,
'दुःख परायो जाणी लेणो मोटी वात है'

उपेक्षाभाव के लिये — 'होकड़ली म्हारी घणी नखरारी,
नकटी, नसेड़ी जावे रे उधारी.
जैसी उक्तियाँ उल्लेखनीय हैं।

इस संग्रह में मालवी कविताओं और गीतों के साथ ही गीतांजलि के दो गीत, पुर्तगाली कविता 'झील' और अंग्रेजी के प्रसिद्ध कवि जान कीट्स की कविता 'हृदयहीन रूपसी' जेसी रचनाओं को मालवी में अनुवाद प्रस्तुत करना विशेष उल्लेखनीय है। बैरागी की कविता लोकधुनों और लोकगीतों से प्रभावित है। यह उनके पिता और भजन मंडलियों की देन है।

वस्तुतः बैरागी भूमि और जनजीवन का कवि है। जननी और जन्मभूमि से उसे लगाव है। विषय चयन में भी उसकी अपनी विशेषता है।

चटक म्हारा चम्पा, पनिहारी, नणदल, कामणगारा की याद. लेवा पधार्‌या जैसी रचनाएं सामान्य जीवन की प्रवृत्ति को प्रकट करते हुए भी उद्दाम श्रृंगार की भावना से पूर्ण है। देश भक्ति की भावना के लिये 'खादी की चुनरी', 'लखारा', 'हार्‌या ने हिम्मत' जैसी रचनाओं को नहीं भुला सकते। 'बेटी की विदा' जैसी कविताएं कठोर हृदय व्यक्ति को भी रुलाने के लिये पर्याप्त हैं। श्रृंगार-वीर-करुण भाव को व्यक्त करने के लिये बैरागी ने अपनी अभिव्यक्ति को साध लिया है, यहीं उसका भाषा की शक्ति और प्रभाव भी बढ़ जाता है। उसके मंचजयी होने का यही कारण है। मैं उसे 'श्रृंगार' और अंगार' का बेजोड़ कवि मानता हूं। बालकवि की मालवी कविताओं का यह पहला संग्रह प्रकाशित हो रहा है। मुझे बड़ी प्रसन्नता है और कवि की तरह मैं असन्तुष्ट हूं कि भूमिका 'मालवी में नहीं लिख सका।

डॉ. चिन्तामणि उपाध्याय

आजाद नगर, उज्जैन
गणतंत्र दिवस १९८३

क्रम

म्हारो आंखां का आंसू तो उफणो री है जलझारी
म्हारा सपना को सेजां पर बरसोग्यो सावन भारी
म्हारा नें म्हारा हिवड़ा का हिवड़ा जिवड़ा मसरी रे
म्हारा छाला की गंगाजल दईरो सबनें पणिहारी

—बालकवि बैरागी

सरस्वती वन्दना

दो सुख साता म्हारी सुरसत माता

घर घर सुख सम्पत पोंचावो
गीत को चन्दन गीत को वन्दन
गीत को दिवलो गीत की बाती
गीत को गजरो गीत को नेवज
थाल सजई लाया म्हारा संगाती
निर्धन चाकर ने गीतां ती
पग धोवा को हुकम हुणावो

दो सुख साता म्हारी सुरसत माता

छन्द न्ही जाणूं बन्द न्ही जाणूं
सुर की महिमा न्ही जाणी
न्ही जाणूं कतरा मोती है
कतरो दूध है कतरो पाणी ?
राज पंखेरू हंसा कन ती
जामण म्हारो न्याव करावो

दो सुख साता म्हारी सुरसत माता

मेरो भेरो व्यो तरसा को
दुनियां तरसी बैठी है
तरसा तीरे आया जामण
फेर काँ अमरत छेटी है
वीणा का दो बोल हुणई ने
जगदंबा या तरस बुझावो
दो सुख साता म्हारी सुरसत माता

हगरा के के लछमी मां ती
था रे राड़ चली अईरी
अणी बले थारा जाया ती
लछमी माता रीसई री
करपण जग को मरम मिटावा
लछमीजी ने लारे लावो
दो सुख साता म्हारी सुरसत माता

विद्या को दो दान धराणी
शरणो लेईल्यो है थारो
ज्ञान का चन्दर भाण उगाओ
मेटी दो यो अंधारो
हिरदे बिराजो घट घट बैठो
सब ने हांचो पंथ वतावो
दो सुख साता म्हारी सुरसत माता

चम्पा ती

चटख म्हारा चम्पा आई रे ऋतु थारी
आई रे ऋतु थारी
आई रे ऋतु थारी
चटक म्हाराश चम्पा आई रे ऋतु थारी

फगुनाईगी रे क्यारी क्यारी
जुबनईगी कलियाँ कचनारी
रंग रस रुप का मधु मेरा में
तरसी तरसी चाँदनी ने पालकी उतारी
चटख म्हारा चंपला आई रे ऋतु थारी

शरद पूनम को चंदो चट्ख्यो मझरी माझल रात
धरती पर वखरीगी गगन की छल्ला भरी परात
किरण किस्योरां ताना मारे कर कर लम्बा हाथ
सोवे कमल जगावे कमली
रोई रोई रात काटे चकवी बिचारी
चटख म्हारा चंपला आई रे ऋतु थारी

परिमल न्ही द्यो परमेसर ने यो भी सुख कंई कम है
जण में बिरहा को सुख कोन्ही व्हा भी कई पूनम है
पीड़ा नाचण के बिन सूनी जीवन की जाजम है
पाखड़ियां की जाजम पाथर
तो आखी ऊमर नाचेगा छबीली छनगारो
चटख म्हारा चम्पा आई रे ऋतु थारी
भूखा भंवरा न्हीभीजे तो मनड़ो मत कर छोटो
तरसी तितल्यां न्हीं रीझे तो कँई माने तू खोटो
भूखा की भरमार भरी है तरसा को कई टोटो
बंध तुड़ई ने गंध उड़ई दे

तो लप लप करती लपटेगा नागणिया नखरारी
चटख म्हारा चम्पा आई रे ऋतु थारी

सोना रूपा की पांखड़ियां नख लागे कुम्हलाय
मीठी गंध उड़े तो दुनियां अध वेंडी वेई जाय
यूं मत सोच जनम यो थारो कई अरथे न्ही आय
कोई बिरहण तो चूंटेगा ही
साजनियां की सेजा पे पूजेगा कामणगारी
चटख म्हारा चंपला आई रे ऋतु थारी

मुरझाणो तो है ही रे वेंडा मुसकई ने मुरझाव
दूध पतासा का ढोल ढुरीग्या कई तो तरस बुझाव
रंग रस रूप का मधु मेरा में मन चावे उई गाव
थारी छाया में छाने छाने
छलिया ने छबीली देईरी लौंग सुपारी
चटख म्हारा चम्पा आई रे ऋतु थारी

पँखेरु

गोफण की वाताँ मानलो रे वीर
उड़ी ने चल्या जावो पैले पार
म्हारा पंछीड़ा रे राज
आजो म्हारे घरे वणीने पामणा

चुगता पे भाटो फैंकणों रे वीर
कोन्ही म्हारा देसड़ला की रीत
म्हारा पंछीड़ा रे राज
आजो म्हारे घरे वणीने पमणा

पियू ने पसीनो ने मेवला द्यो अमरत पाणी रे पंखेरू
मेवला ने द्यो अमरत पाणी
मेंहदीड़ा हाथों में छाल्या पड्या जदी
धरती की मांग भराणी रे पंखेरू
या मोतियां से मांग भराणी
मोती चुगो मत मांग का रे वीर
लागेगा सुहागण का श्राप
म्हारा पंछीड़ा रे राज
आजो म्हारे घरे वणीने पामणा
गोफण की वातां मान लो रे वीर

सासरिया का लोग रसीला ने
चूनर म्हारी झीणी
रे पँखेरू चूनर म्हारी झीणी
रपसी कोई नी म्हारा अंग पर
कारीगर की छीणी रे पंखेरू
वणी कारीगर की छीणी
डागरा पे गोफण फेरतां रे वीर

लागे म्हाने पंथीड़ा की लाज
म्हारा पछीड़ा रे राज
आजो म्हारे घरे वणीने पामणा
गोफण की वातां मानलो रे वीर

ऊंचा उड़ो ने आतमणे नारो
हरियल पाग हुकई री पंखेरू
लीली लीली पाग हुकई री
म्हारो होकड़ली खेतां में रमतां रमतां
वालम ने बेहकई री पंखेरू
थारा जीजा सा ने बेहकई री
जाओ जाओ चुगो वणी खेत में रे वीर
लेई जाओ थां का सोई परिवार
म्हारा पंछीड़ा रे वीर
आजो म्हारे घरे वणी ने पामणा
गोफण की वातां मानलो रे वीर

वेरण की आंखां में चांच गड़ाजे ने
बेन्याँ बई को बदलो लीजे रे पंखेरू
जीजी बई को बदलो लीजे
मारवणी रोवे खेताँ में ढोला
बालम ने कई दीजे रे पंखेरू
थारा जीजा सा ने केई दीजे
सोना मढ़ऊं थारी चोंच म्हारा वीर
दूंगा थने सेरा ने सरपाव
म्हारा पंछीड़ा रे राज
आजो म्हारे घरे वणीने पामणा
गोफण की वातां मान लो रे वीर

गोफण म्हारी जनम की गोठन
तू म्हारो परबत वीरो रे कन्हैया
तू म्हारो परवत वीरो
एक एक भाटो भारत मां को
लाख रूपेया को हीरो रे पंखेरू
लाख रूपेया को हीरो
गोठण ने बांध्या हाथ म्हारा वीर
हीरा तो वीरा का सिणगार
म्हारा पंछीड़ा रे राज
आजो म्हारे घरे वणीने पामणा
गोफण की वातां मान लो रे वीर

तू भी आवजे ने भावज ने लारे लाजे
रे कन्हैया सुहागण ने लारां लाजे
माणक मोतीड़ा की खीर वणाऊं
तू बेन्यां बई का हाथां से खाजे रे पंखेरू
जीजी बई का हाथां से खाजे
भावज ने दूंगा कांचरी रे वीर
लागी थांसे पालणा की आस
म्हारा पंछीड़ा रे राज
आजो म्हारे घरे वणीने पामणा
गोफण की वातां मान लो रे वीर

सास लड़ेगा ने लोग हंसेगा
तू जो अड़्यो स्वारथ पे पंखेरू
तू जो अड़्यो स्वारथ पे
डीले न्हीं कमावो ने लोगां को खावो तो

दाग लगे ओ भारत पे पंखेरू
यो तो दाग लगे ओ भारत पे
वातां जगत की जाणी ले रे वीर
उड़ी ने चल्या जाओ पेले पार
म्हारा पंछीड़ा रे राज
आजो म्हारे घरे वणीने पामणा
गोफन की वाताँ मान लो रे वीर

बारा मासी

कोयल तू मत बोल बावरी
म्हारो जी यूं घबरावे
कदी पियाजी घर आवे

माध उतरवा लागो पांचम लाल गुलाबी आई
चल्या गया परदेस पियाजी हाय कठे परणाई
होरी कण के संग खेलूँ फागण म्हाने नही भावे
कदी पियाजी घर आवे

चेत चली गणगोर पूजवा गोठन करे ठिठोली
नेण झरामर बरसन लागा भींजी म्हारी चोली
आई आखातीज वेशाखां देख तावड़ो इतरावे
कदी पियाजी घर आवे

जठ जठ के संग जेठाणी जागे आधी रातां
रात चांदनी कंत कामणी करे कणां कई वातां
अषाढ़ मैं उड़ खवरां लाजे कूण पिया ने भरमावे
कदी पियाजी घर आवे

की जे पियूजी थांकी याद में हावण लागे हूको
हींचूं कण के संग अकेली या वेरां मत चूको
होकड़ली या वीजू म्हाने मास भादवे डरपावे
कदी पियाजी घर आवे
लंका जीती और रामजी घरे जानकी लावे
शरद पूनम की रात चांदणी दन आसोजी जावे
काती दीवो दिवारी को लागे न्ही बुझ बुझ जावे
कदी पियाजी घर आवे

अगहण आयो ठंड ठियारी ठंडी ठंडी लागे
लम्बी-लम्बी रात पोष की काढूं चूल्हा आगे
नाचण ने जद जाणू कोयलिया प्रीतम ने लारे लावे
कदी पियाजी घर आवे

वीरा की अटारी

म्हारा सायबा रे
म्हने न्ही भावे नगरी थारी
यां से दीखे कोन्ही वीरा की अटारी

डावे बा ने नारतां जी कोई आड़ो आवे रे पहाड़
जीमणे म्हारा जेठ नें जी कोई करदी हवेली की आड़
वारी में ती नारतां जी कोई आड़े आवे अंबुवा का झाड़
अरे कोई काटी न्हाको रे
अणी आंबा की झमकारो
यां से दी कोन्ही वीरा की अटारी

पाणूयो भरवा जावतां जी कोई छीजे म्हारो सरीर
सखियां भरले बेवड़ा जी कोई म्हूं बरसाऊं नीर
पणघट ती दीखे पियाजी कोई सब सखियां का पीर
कणी दन करी दूंगा
अणी बावड़ी ने हत्यारी
यां से दीखे कोन्ही वीरा की अटारी

नणदल बोली खेत में जी कोई भाभी ऊ थारो गाम
व्ही गोयरा का रुंखड़ा जी कोई ऊ देवरा को मुक्काम
कर कर ऊँची ऐड़ियां जी कोई देख्यो मुलक तमाम
अरे ई हूजी गी रे
पगां की आंगरूयां म्हारी
यां से दीखे कोन्ही वीरा की अटारी
चड़यां चरकल्यां कागल्यां जी कोई मोटा थांका भाग
उड़ी उड़ी ने झट देख लो जी कोई थी थां का वीराजी का बाग
अरज सुणो किरपा करो जी कोई दुखियारी पे आज

अरे कोई देई दो रे
म्हने दो पल पांखा उधारी
याँग से दीखे कोन्ही वीरा की अटारी

मोड़ बंध्यो मेंहदी लगी जो कोई मन ने काड्या दाँत
गाजा वाजा धूम में ज़ी कोई नवो नवो व्यो साथ
एक झलक के कारणे जीं कोई तरसूंगा दन रात
असी जो पेलाँ जानती रे
तो रेती जनम कुंवारी
याँ से दीखे कोन्ही वीरा की अटारी

नणदल

पिया म्हारी नणदल घणी नखरारी
राजा म्हारी नणदल घणी नखरारी
नखरारी लागे प्यारी
जामण जायी बैन्यां थारी
घणी नखरारी
सैंयां म्हारी नणदल घणी नखरारी

आज दुपेरां म्हूं न्हावा ने गई थी
नखरारी दारी म्हारे साथे अई थी
बड़ी बड़ी आंखां ती देखे अंग म्हारो
के वे के भाभी बदलीग्यो रंग थारो
अणी खुणे वणी खुणे
थांकी म्हारी बातां हुणे
करे रखवारी
पिया म्हारी नणदल घणी नखरारी

गोठन के घरे जई के वा केयूं केई ने जावे
छाने छाने जोसीड़ा ने हाथ वतावे
जोसी थारा टीपणां में देखो भाग म्हारा
चांद कदी ऊगेगा डूबेगा कदी तारा
खेतां में या रसिया गावे
दीवा लाग्यां घरे आवे
असी कई सुधारी ?
पिया म्हारी नणदल घणी नखरारी
म्हारा भई तो यूं को ने म्हारी बई ती यूं को
कणा कई केवाड़ें म्हूं कई कूं थीं को
अबके हटवाड़ा ती हुड़ो एक मंगई दो
पिंजरा में मैना रोवे पियाजी उड़ई दो

बजाजां के जावो पिया
सालूड़ा मोलावो पिया
पागां चल्ला वारी
पिया म्हारी नणदल घणी नखरारी

वागाँ में भी व्हा तो भंवरा के पाछे भागी
तितल्यां पकड़ने गाला पे बैठावा लागी
निवूंड़ा ने डाडम काचा रोज तोड़े
काची काची कलियां की बहियां मरोड़े
आपने दीखे व्हा भोली
फाड़ी लाखी नवी चोली
गाठी घुंडूयां वारी
पिया म्हारी नणदल घणी नखरारी

केई दाण परणईद्या अणा दनां ढूला ढूली
चम्पा ने चमेली को मांडो करनो न्हौ भूली
म्हारे डीले झूमे रोज पनघट पे जई जई ने
म्हारो मन भी वेंडो वेईग्यो पिया वणके साथे रेई नें
आज तो थी आंखा मीचो
काले कई ऊँचो नीचो
थांकी जिम्मेदारी
पिया म्हारी नणदल घणी नखरारी

पनिहारी

नवी उमारिया नवी डगरिया नवा पिया की नवी प्यारी
नवी नगरी में नवी गगरी ले पनघट जईरी ओ पनिहारी

मोटी मोटी आंखाँ में नानो नानो काजर आंखाँ लागे नवी नवी
आज नाक में नथ पहरी तो नाक कहे के मूंह भी नवी
नवी मांग में नवा नवा मोती कंकू की टीली नवी नवी
हंसी कामणी तो शरमईगी जुही की कलियां नवी नवी
झुके नजरिया दुखे कमरिया भरे अनोखी सिसकारी
नवी नगरी में नवी गगरी ले पनघट जई री ओ पनिहारी
नवी उमरिया नवी डगरिया

नवी गोठणां आगे पाछे नवी नणद ने साथ करी
नवी चूमरी नवी नेज ली नवो घड़ो ने नवी चरी
ऊंची मेड़ीलाल किंवाड़ी नवी नवी पेड्यां उतरी
तो नवा पड़ोसी देखण लागा देखे ओ डावड़ा फरी फरी
नवो छेवड़ो नवो बेवड़ो नवा दरद की दुखियारी
नवी नगरी नवी गगरी ले पनघट जई री ओ पनिहारी
नवी उमरिया नवी डगरिया

नवी चूड़ियां जरा जरा सी तड़की तड़की लागे ओ राज
नवी नवी रातां की नवी नवी वातां चूडियां के मुख से सुण लो आज
नवी नवी लाजो मरे लाज ती देखो ने अई री लाज
अंग अंग रस में मदमातो जणे मूल पर चढ़ ग्यो व्याज
चाले पसीना का रेला रंगीला रस और रंग की पिचकारी
नवी नगरी में नवी गगरी ले पनघट जई री ओ पनिहारी
नवी उमरिया नवी डगरिया

कमर कंदोरो आगे आवे घड़ी घड़ी व्हा हरकावे
चोली अणबोली बोली में न्ही केणो जो उ कईं जावे
उड़े ओढ़नी लिपटे लंहगो पग यें वें पड़ता जावे
बिछिया के लारे पगां की मेंहदी नवा नवा रसिया गावे
नवी पनैया काटे रे कन्हैया नवा नवा छाला वारी
नवी नगरी में नवी गगरी ले पनघट जईरी ओ पनिहारी
नवी उमरिया नवी डगरिया

धक धक हिवड़ो करे हठीलो ज्यूं पनघट मेरे अईर्‌यो
कंत पेलाई से पनघट पर बलद्‌या ने पाणी पईर्‌यो
मीठो जोग मिलायो रामजी पापी पपैयो यूं गईर्‌यो
गेले देई दो रे कंत कामणी सूरज आतमणे जईर्‌यो
परणी सहेल्याँ पड़ी गुलाबी लाल लाल पड़गी क्वाँरी
नवी नगरी में नवी गगरी ले पनघट जई री ओ पनिहारी
नवी उमरिया नवी डगरिया

नवो धान

नवो धान घर में आयो
पूँजी को धनुष तोड़वा ने जणे
सीता को राम स्वयंवर में आयो
नवो धान घर में आयो

कारा गोरा गारा में निपजो म्हारा दाता
बदली दी अणने गरीबां की रातां
चोमासे सरसो ने ह्यिारे हरसो
माणक ने मोत्यां ती भरदी परातां

बातां ह्री बातां में
हाथां ही हाथां में
मेहनत की एक हीज लहर में आयो
नवो धान घर में आयो

खेत में न्ही मायो खरा में न्ही मायो
तो छकड़ा में बैठी ने ग्वाड़ी में आयो
मुट्ठी को वेईग्यो यो माणी मणासा
छकड़ा ही छकड़ा में वेईग्यो सवायो

गाड़ी गडारां की
गलियां गुंजातो
उमराव पाकी उमर में आयो
नवो धान घर में आयो

खेतां का राजा ने मूंछा मरोड़ी
राणी ने सजनसई ओढ़नी ओढ़ी
लीप्यो छाब्यो आंगणों ने मांडी द्या मांडणा
आरती संजोई ने गीत गाती दौड़ी
निरधन को बैली

लछमी ती पैली
अरवाणो धोरी दुपर में आयो
नवो धान घर में आयो

घर घर बधावो ने घर घर दिवारी
मेटी दी अणने अमावस अँधारी
कतराई बिछड़्या के अईग्या नवा आणा
परणई दी कतरी ही डावड़्यां कुवांरी
अमरत का दुकड़्या में
आयो अवतारी
लगनां का लागत पहर में आयो
नवो धान घर में आयो

रकड़्यां घड़ईग्या कंदोरा
वाजूबन्द की बेरकां में लूमें लांबी ओ री
घेरदार घाघरा ने टुक्यां वारी काँचरी
पेरी तो ओरा दोरा फिरे नवा छोरा
गाम गम असवारी
अईगी मदन की
रूप को रंगीलो रेलो शहर में आयो
नवो धान घर में आयो

मन में उमंग और तन में उमंग है
मेहनत की जिन्दगी को नवो रूप रंग है
हस्ती की मस्ती है मस्ती का गीत है
गीत में भी प्रीत है प्रीत को भी ढंग है
निरधन गरीब कँई
उमरा अमीर कँई
हगरा को ठाठ बराबर में आयो
नवोधान घर में आयो

बेटी की बिदा

घुड़लो थोड़ो ढावले ए घुड़ला असवार
ऊबो आँसू ढारतो म्हारा पीहर को परिवार
भाई भावज की प्रीतड़ी दाऊजी माऊजी का लाड़
ईसखियाँ का झूमका ई पनघट ई झाड़
गीतां भरिया खेतई म्हारो व्हालो देस
पिवड़ा थारे कारणे आज बण्यो परदेस

ओ दाऊजी
ओ माऊजी
ओ दाऊजी अवगुण म्हारा भुलाजो रे
राजल बेटी ने वेगी बुलाजो रे
राजल बनड़ी ने वेगी मंगाजो रे
ओ माऊजी अवगुण म्हारा भुलाजो रे

पीपल रेटली गौरजां अमर्‌या करे सुहाग
वणकी पूजा के बले म्हां वाड़े वायो थो गुलाव
कांटा की एक डार में अन्न पाणी गी भूल
छाने पाणी पावती के आज खिलेगा फूल
पण पोटा में अईगी कली माली बिछड़्यो जाय
देखजो कारो भंवरड़ो ऐंठी न्ही कर पाय

ओ पहिलो फूल गौरी के चढ़ाजो रे
राजल बनड़ी ने वेगो बुलाजो रे
ओ सखियां अवगुण म्हारा भुलाजो रे

भावज आपणो सूवलो लेगा म्हारो नाम
तो राधा को घनश्याम ने केई दी जो परणाम
कजरी झूमर दादरी भूखीं न्ही रेई जाय
चामल मां की धार पर लाजो बीर चराय

नवा नारक्या हाल मती जोती दीजो बीर
खाँड खोपरा न्हाकजो जो गाठो बगे शरीर
ओ गूंगा गोठीड़ा ने बीराजी निभांजो रे
राजल बेन्यां बई ने वेगी बुलाजो रे
ओ वीराजी अवगुण म्हारा भुलाजो रे

छोटी भाभी थीं, अबे माथे लो मत बोझ
भुआ का आंसू पोंछवा चढ़ी भतीजां की फौज
दो पहरा मत सोवजो ने रोज पीसजो धान
म्हारे बधाई लावजो है सूरज भगवान
नवा नवा दोई गाल पर म्हारो पहिलो प्यार
कुल की बेल बढ़ावजो या भुआ की मनुहार
ओ म्हारो पहिलो सन्देसो सुणाजो रे
लाला भुआ बई ने वेगी बुलाजो रे
ओ भाभी अवगुण म्हारा भुलाजो रे

व्हाला वीरा बेन भाई थीं मती भिजोवो गाल
धूरा का घर के बले मत लड़जो रे लाल
वेन बिना कई बीरजी ने बीर बिना कई बेन
नैन बिना कई नीर जी ने नीर बिना कईं नैन
तू भक्ति भगवान को यो वण को वरदान
या भक्ति चाली सासरे तो रोईर्‌या है भगवान
ओ दाऊजी का आंसूड़ा सूखाजो रे
लाला जीजीबई ने वेगी बुलाजो रे
ओ बीरा अवगुण म्हारा भुलाजो रे

म्हारी जामण कूवले जावतां तू गेला में देख
धूरा में दिख जावेगा थने म्हारा पगां की रेख

बैंटी का पग पर झरे जो जामण की आँख
मनक जमारो धूर है या चांद सूरज की साख
खेत कुआ खलिहान में थीं गाजो मंगल गीत
मन रोवे मुखड़ो हँसे तो मनक जनम की जीत
ओ कोई आंसुड़ा मती लाजो रे
राजल बेटी ने वेगी बुलाजो रे
ओ माऊजी अवगुण म्हारा भुलाजो रे

दाऊजी थी अबे तोड़ी दो या आँसू की बैल
यो आंगण छूटे आखरी म्हारो धोक पगां में झैल
दुख देखो मोटी करो ने देव मनावो बीस
एक घुड़ला असवार ने थी देई दो रे बख्शीश
ई नारी का जनम ने दिया बिधाता श्राप
के बालपणां के बिछड़तांई बिछड़ेगा माँ बाप
ओ म्हाने सपना में देखी ने भुलाजो रे
राजल बैटी ने वेगी बुलाजो रे
ओ दाऊजी अवगुण म्हारा भुलाजो रे

बादरवा अईग्या

बादरवा अईग्या
अल्या बादरवा अईग्या
दादा बादरवा अईग्या

देखो देखो बिरहण की ऊँची ऊँची मेड़ी का
लटक्या लटक्या माथा पे लटालूम छईग्या
बादरवा अईग्या
देखो बादरवा अईग्या

पी ने आया समदर को पाणी खारो खारो
जाणा कटई ती ई रंग लाया कारो
ऊगमणे आतमणे लंकऊ धरउ ती
आया ने आताई ने करद्यो अंधारो
भूखा आठ महिना का टूट्या जो टटकी ने
बरबरतासूरज ने चौड़े धाले खईग्या
ई बादरवा अईग्या
अल्या बादरवा अइग्या

रीता गगन में भरईग्यो देखो मेरो
मेरा में लागीरयो बिजरी को फेरो
अछन अछन इतरावे डील में न्ही भावे
गूंजईर्‌या घूंजई र्‌या इन्दर को डेरो
पचरंगी पागां ने देखी ने बागां में
सतरंगी चूनर और लैहर्‌या लेहरईग्या
बादरवा अईग्या

आखाई गगन पे अणा की बपौती
पण रम्मा झम्मा रोरीर्‌या गोरा गोरा मोती
रीझीग्या भीजीग्या मोर्‌या ने मोरनी

गावे म्हारो मालवो ने नाचे ओ हाड़ोती
हूना हूना खेतां की हूनी हूनी मेड़ा पर
गरबीली गोर्‌यां का मेरा भरईग्या
बादरबा अईग्या

कतरई दनां में या पुरवा अई पामणी
तो रसिया गवाया ने ऋतु अई हावणी
डावड़्यां ने बावड़्यां पर कजरी उगेरी
हींचा पे हींची र्‌या कंता ने कामणी
देखो म्हारी विरहण की कांकड़ली आंखड़ल्यां
आली आली लागे पण आंसू हुकईग्या
ई बादरवा अईग्या

कंगाल नारा भी डील में न्ही मईर्‌या
नखरारी नद्‌यां का जीवन पोमईर्‌या
बोली रे टींटोड़ी रांभी र्‌या बाछरू
डाबरा में डेंड़का भी बारामासी गइर्‌या
आखी भरईगी व्हा तरसी तरई भी
नागा पूगा सरवर का अंग गदरईग्या
बादरवा अईग्या

लाखां कराड़ा की आसाईबादरा
अन्न धन्न लक्ष्मी की भाषा ई बादरा
धरती ने धरती का जाया का गोठी
घर घर बंटावे पतासां ई बादरा
राव रंक रावरे
छईग्यो उछाव रे
मेहनत का रंग में हगरा रंगईग्या
बादरवा अईग्या

जोतईगी हामदां ने बलद्या डकारया
तो भाभी आड़ी नारी ने दादा खंखाऱ्या
नेणा ने सेणा में बात करी मन की
बन्द कऱ्या बारणा ने बन्द करी बाऱ्यां
भोरा भोरा भाभी का गोरा गोरा हाथां ती
कारा कारा खेतों में मोती बवईग्या
वादरवा अईग्या
अल्या बादरवा अईग्या

महल की कमाड़ी

चड़ चूं चूं चूं चूं वोलो रे थारा महल की कमाड़ी
महल की कमाड़ी रे महल की कमाड़ी
चड़ चूं चूं चूं चूं बोले रे

गरज पुरावा अई गज गामण
चाली तो अणऋतु चाली ग्यो कामण
नींद पराई वेईगी जग की
अब नींदड़ली ने छोड़ो म्हारा सायबा अनाड़ी
चड़ चूं चूं चूं चूं बोले रे थारा महल की कमाड़ी

मेंहदी महके मतवारी ने कंकू करे किलोल
चांदा ने दूँ चांदणी को मूँडे माँग्यो मोल
पाणीन्ही दे मांगवा म्हारी पायलड़ी का बोल
नवलख तारा को तप टूटीग्यो
पेचां वारी पागाँ हार्‌यो चाँद सो जुवाड़ी
चड़ चूँ चूँ चूँ चूँ बोले रे थारा महल की कमाड़ी

हाँझ बापड़ी आँसू देई ने लेईजा रूप उधार
रोज परोड़े उषा आवे अई अई करे रे गुहार
अधकाची कलियाँ पर म्हारा जोबनियाँ को भार
वारई महिना की पटराणयाँ भी
ओढ़े म्हारी रूप छटा की उतरी पुतरी साड़ी
चड़ चूँ चूँ चूँ चूँ बोले रे थारा महल की कमाड़ी

नाचे जद म्हारा सपना तो ढबे नाचता मोर
आस उठावे घूँघटियों तो लाजा मरे चकोर
टीस उठे ऐसी उठे ज्यूँ मन्दरिया में चोर

कूँपर के ऊपर अम्बर है
और पीरा पीरा पानड़ा पड़े रे पिछाड़ी
चड़ चूँ चूँ चूँ चूँ बोले रे थारा महल की कमाड़ी

ऊंचा कोट कंगूरा कूदी कूदी नगर उजाड़
लोक लाज का समदर कूदी कूदी कोड़ पहाड़
अगजग की रीतड़ल्याँ तोड़ी अब तो खोल कमाड़
प्रीतड़ली की पूनम तरसे
मूछड़ली को मान अब तो राख रे खिलाड़ी
चड़ चूं चूं चूं चूं बोले रे थारा महल की कमाड़ी

डूबी डूबी आँखड़ल्यां की कोर नींदा तू खोल
रूप कमल की पाँखड़ल्या ती भँवरा दई दो बोल
निठरई में निकरे रे निठार फागणियो अणमोल
चम्पा वरणी कोयल कूके
यो ही करनो थो तो म्हारी लाज क्यूं उघाड़ी
चड़ चूं चूं चूं चूं बोले रे थारा महल की कमाड़ी

कामणगारा की याद

उतारूं थारा वारणा ऐ म्हारा कामणगारा की याद
कामणगारा की याद
ऐ म्हारा बणजारा जी की याद
उतारूं थारा वारणा ऐ म्हारा रूप ठगारा की याद

राजदुलारी म्हारा राज रतन की
खबरां लई म्हारा पियूजी का मन की
निछराऊं जोबन का जगमग सपना
वारूं हिलोरां हटीला वालापण की
यूं मत जऊं जऊं कर नखरारी
छनी एक छानी मानी रे छनगारी
तो उतारूं थारा वारणा ऐ म्हारा कामाणगारा की याद

नेणा की कांवड़ को नीर चढ़ाऊं
हिवड़ा को रातो रातो हिंगलू लगाऊं
रूड़ा रूड़ा रतनारा थाक्या पगां से
ओठां हो ओठां ती मेंहदी रचाऊं
ढब थारे चन्दा को चुड़लो चिराऊं
नौलख तारा का बिछिया पेराऊं
ने उतारुं थारा वारणा ऐ म्हारा मन मतवारा.की याद

कसकां को नानो नानो काजर घालूं
झीणी झीणो सांसां को ओढ़ाऊंगा सालू
टूटी निसांसां का रथ में राणी
बिरहा का बागण में रमवा लेई चालूं
रोवे म्हारो चम्पो रोवे रे चमेली
छनि एक छानी मानी रे म्हारी हैली
तो उतारुं थारा वारणा ऐ म्हारा साजनियांजी की याद

कण कंण ने याद करे है बणजारो
कण कण के कागद लिखे कामणगारो
आखी आखी रात जगावे जो म्हाने
फैरे है कतरी पांगत्यां ऊ निठारो
के कतरो दाण गणे है ऊ तारा
लेई ले छल्ला ने हथफुल म्हारा
और उतारूं थारा वारणां ऐ म्हारा कामणगारा की याद

हांची हांची वात बतई दे म्हारी राणी
कटे कटे पियूजी ने पियो ठंडो पाणी
कसा कसा बागां में ग्यो म्हारो भंवरो
कटे कटे कलियां की छबियां लजाणो
याद कुण आयो उठतां ही पैली
केई दे तो हिवड़े लगऊं म्हारो हैली
ने उतारुं थारा वारणा ऐ म्हारा कामणगारा की याद

म्हूं याद अई के न्ही अई या केई जा
यूं कई ऊब्री है थोड़ी तो बैइजा
पियूजी की आखां में आजी दे तो
ले म्हारा नैणा की नींदड़ली लेईजा
लेईजा म्हारा हिवड़ा की हाय हठीली
दीजे म्हारा पियाजी के ललवट पर टीली
तो उतारुं थारा वारणा ऐ म्हारा कामणगारा को याद

ऐ म्हारी लालां बई ऐ म्हारी फुलां बई
म्हारे सिवा सपना में कूण कूण और अई
रोक्यो कण ने गेलो म्हारा पवन पिया को
कण कण ने चम्पा की कलिग्रां सुंघई

कूण म्हारा राजा संग चौपड़ खेली
थने म्हारा होगन केई दे म्हारी हैली
ले उतारुं थारा वारणा ऐ म्हारा कामणगारा की याद

अई है तो दो दन रे राणी रम्भा
थारे लारे कटी जागा दन म्हारा लम्बा
जणा कसा पाप फूट्या है म्हारी माड़ी
ढरके है आंसूड़ा ने ररके औरम्भा

मती जाव थारो जनम जस गऊंगा
तू के गा वणसे थारो ब्याव रचऊंगा
उतारुं थारा वारणा ऐ म्हारा कामणगारा की याद

बरखा आई रे

अमर सुहागण बैन्यां म्हारी
ओ रे मोटा भाई रे
झैलो म्हारी बधाई रे
अई अई रे बरखा आई रे
आई रे बरखा आई रे

नौपत ऊपर डंको लागो राणी पामणी अईरी है
भाई भायला सखी सहेल्यां सब ने लारे लईरी है
डुंगर ऊपर डेरा न्हाक्या चालो बधाई ने लावां रे
झांझ बजावो मिरदंग लावो कजरी नें ददरी गावां रे
अणी कजरी पर बलिहारी
अणी ददरी पर जऊं वारी
जणने हुणवा ओ
जण ने गुणवा ओ
सोला अठवाड्या अद्धर में
इन्द्र धनुष का रंग छाजा पर अद्भुत सभा जुड़ाई रे
आई रे बरखा आई रे

धरती माँ की लीली चूनर ऊन्हारा में कुम्लई गी
तपी रोहिणी तपणी तणो ने छतां पाणीं तरसई गी
ओ रे तरसा मोर मोरनी ओ
ओ रे तरसा मोर मोरनी ओ कांकड़ का रखवारां
तपत मिटईलो तरस बुझईलो मेवला करी र्या मनवारां
अणी तपत पर बलिहारी
अणी तरस पर जऊं वारी
जणे मिटावा ओ
जणे बुझावा ओ
जणे मिटावा जणे बुझावा
भर्‌या जेठ का अंगीरा पर

अरब समन्दर की कामणियां माथे ममणा लाई रे
आई रे बरखा आई रे

आगे आगे गऊ का जाया पाछे धणी धराणी ओ राम
ऊंचा चौड़ा ललवट ऊपर मेहनत की सेनाणी ओ राम
गज गज चौड़ी छाती वारो रे
गज चौड़ी छाती वारो रे मरद मालवी ललकारे
ऊपर ही ऊपर अई गरजे धरती पर तो अईजा रे
अणी धणी पर बलिहारी
अणी जणी पर जऊं वारी
जणे हरावा हो
जणे डरावा ओ
जणे हरावा जणे डरपावा
पग पटकी री भूखी बिजली
दिग्गज आपो खोई गरजी र्‌या दसी दिशा को पाई रे
आई रे बरखा आई रे

आंबां भई का अजब गोखड़ा हूना हूना वेईग्या रे भई
मन को वातां कैती कैती कोयल बई परदेसां गई
झांझ रुड़ा में बाप बापड़ो ओ
झांझडूड़ा में बाप बापड़ो भरी दुपेरां कूटईग्यो
बेटी कईगी देस पिया के दाऊजी को घर लूटईग्यो
अणी बैटी पर बलिहारी
अण दाऊजो पर जऊं वारी
जणी बैटी ने रोई रोई ने
जणी बैटी ने रोई रोई ने जणा दाऊजी ने खोई खोई नें
सावण भादों की झाड़ियां में
कतरी ही बिछड़ी बेट्‌यां का मन की आस पुराई रे
आई रे बरखा आई रे

अई रे वादरी भागी भागी भरी भरी कामणगारी
पाछे को पाछे आयो रे वादरो ढब ऐ ढब दारी नखरारी
यें ती अईग्यो रथ इन्दर को ओ
यें ती अइग्यो रथ इन्दर को अबे मची खेंचाताणी
लाड करे इन्दर नाचण का राड़ करी री इन्द्राणो
अणी राड़ पर बलिहारी
अणा लाड़ पर जऊं वारी
जणी राड़ में गरजी नें
जणा लाड़ में बरसी ने
राड़ राड़ में गरजी ने भई लाड़ लाड़ में बरखीनें
एक बरस का अम्मर तरसा
सगुण पपैया की स्वाती में तीखी तरस बुझाई रे
आई रे बरखा आई रे

घरऊ बादरी उठी अघर में पणघट ऊपर छईगी ओ राम
भर्‌यो वेवड़ो कूण तोकावे पणिहारी घबरईगी ओ राम
लेंहगा लुगड़ा ती लपटाणी ओ
लंहगा लुगड़ा ती लपटाणी आतमणा की पवन परी
तो बालपणा का बिछड़या वालम माथे मैली ओ राम चरी
अणी सजन पर बलिहारी
अणी सजनो पर जऊं वारी
जणे मिलावा ओ
जणे हँसावा ओ
जणे मिलावा जणे हँसावा
पनघट का चिकणा पंक्त्या पर
पवन परी ने लोक लाज की लछमण रेख मिटाई रे
आई रे बरखा आई रे

झरमर झरमर मेवलो बरसे डीले छेंटे गुलसाड़ी
म्हारा भोरा ढारा साजनियां थी वेगी हांको न्ही गाड़ी
अणी पंथ पर आता जाता ओ
अणी पंथ पर आता जाता मंके नज़र लगई देगा
चतर पड़ौसी थां की मेड़ पर अपणा बैल चरई लेगा
अणी चतर पर बलिहारी
अणी भोरा पर जऊं वारी
जणे भणावा ओ
जणे वतावा ओ
जणे भगावा जणे बतावा
अनबोल्या अलवैल्या बलद्या
लाख चामका खाया फेर भी गाड़ी न्ही रड़काई रे
आई रे बरखा आई रे

नवा देस का मस्त मजूरां ओ रे धरती का राजा
निर्धनता ती जुद्ध लड़ी लो बाजी ग्या रण का बाजा
थां की हुंड्यां सिकरावेगा ओ
थां की हुंड्यां सिकरावेगा सेठ सराफ बजारां में
धणी ऋणी दोई सबर राखजो निपजे नीलम गारा में
अणी करज पर बलिहारी
अणी फरज पर जऊं वारी
जणे चुकावा ओ
जणे निभावा ओ
जणे चुकावा जणे निभावा
वगर लगन और वगर मुहूरत
रत्नाकर ने राजल बेट्यां इन्दर ती परणाई रे
आई रे बरखा आई रे

खादी की चुनरी

नणद म्हारे खादी की चुनरी मंगाओ सा
नणद म्हारे खादी की चुनरी मंगाओ
दाऊजी से कहो आपका माऊजी से कहो
आपका वीराजी ने भी समझाओ
नणद म्हारे खादी को चुनरी मंगाओ

हाथां को तानो ने हाथां को बानो
अधरंग रंग रंगवाओ
तिरंगी किनारी ने चुनरी रुपारी
बीच में चरखा छपाओ
नणद म्हारे खादी की चुनरी मंगाओ

खादी को लंहगा पाट मगाओ
म्हारे कोटा में सिलवाओ
जयपुर मोकलो आपका वीराजी ने
खादी की अंगिया मगाओ
नणद म्हारे खादी की चुनरी मगाओ

बिड़ला भवन की धूल मगाओ
म्हारे सुहाग की बिंदिया लगाओ
लाल किला की लाली की नणदल
हाथे पगे मेंहदी रचाओ
नणद म्हारे खादी की चुनरी मगाओ

गांधी का देस की अमर सुहागण
अबे म्हाने केई ने बतरावो
बालकवि म्हारा पियाजी ती को जो
सुहागण ने हिवड़े लगावो
नणद म्हारे खादी की चुनरी मगाओ

बणजारा

जणा खेतां में कजरी गई थी वणा खेतां की पकीगी जुवारां
पगडंडी पर वेईंने अबतो
वेगो अईजा रे वणजारा

एक दन आयो वारद लेईने लोंग सुपारी देईग्यो
दाख बदामाँ चार चखई ने बैंरी बैंर वसईग्यो
हिवड़ो परखणो तू कई जाणे ऐ बणजारा रे
हिवड़ो परखणो तू कई जाणे लोंग सुपारी परखणहारा
पगडंडी पर वेई ने अबतो वेगो अईजा रे बणजारा

सास जेठाणी नणदल म्हारी मन का गांठ गठीली
देवराणी ने खटके म्हारी काजर कंकू टीली
जोग उतारी जा जोगण को ऐ बणजारा रे
जोग उतारी जा जोगण को ऐ जोबण का निरखणहारा
पगडंडी पर वेई ने अब तो वेगो अईजा रे बणजारा

असमानी फुलड़ा अलसी का अबतो झड़वा लागा
पाड़ोसण का चीर बसन्ती तड़के पड़वा लागा
कोयल का घुघरा वाजीग्या ऐ बणजारा रे
कोयल का घुघरा वाजीग्या वाज्या नौपत ढोल नगारा
पगडंडी पर वेई ने अब तो वेगो अईजा रे बणजारा

पटवार्यां का वागां में थने कई कई कौल कर्या था
काची ऊमर का वचनां में पाका रंग भर्या था
कूण बिलमायो तू भूलीग्यो ऐ बणजारा रे
कूण बिलमायो तू भूलीग्यो बालपणा का व्हो कौल कुंवारा
पगडंडी पर वेई ने अवतो वेगो अईजा रे बणजारा

सब सोवे म्हारी सुरत सहेली गगन मंडल में जावे
दुखियारी का मन की बातां चांद पे लिख लिख आवे
सन्देसा लिखी लिखी ने रंगी द्या ऐ वणजारा रे
सन्देसा लिखी लिखी ने रंगी द्या चंदाजी का बागा कारा
पगडंडी पर वेई ने अब तो वेगो अईजा रे बणजारा

सौतड़ थारी बावड़ल्यां पर नीर पियेगा बणजारो
जगदम्बा थारे बांदे रे पालणा अमर्‌यो वे चुड़लो थारो
निरमोहीला ती की जे एक पल ऐ सोतड़ली ऐ
निरमोहीला ती की जे एक पल देखी ले ऊ चांद सितारा
पगडंडी पर वेई ने अब तो वेगो अईजा रे बणजारा

मनक बणई ने दूण जनम को बैर लीदो रे म्हारा दाता
अणी वीचे तो दुखियारी ने दाख बदाम बणाता
लेई ने फिरता खेड़े खेड़े ऐ वणजारा रे
लेई ने फिरता लारे लारे अणवोली ने वेचणहारा
पगडंडी पर वेईने अब तो वेगो अईजा रे बणजारा

कंचन लोभी तू धन जोड़े म्हूं मोतीड़ा ढारूं
जिवला ने हिवला का दिवला रे पिवला बोल कटा तक बारूं
यूं आवा में मोड़ो व्हे तो ऐ बणजारा रे
यूं आवा में मोड़ो व्हे तो सपना में ही अईजा ठगारा
पगडंडी पर वेई ने अब तो वेगो अईजा रे बणजारा

बेटा की बिदा

हाँझी जरमां की मेंहदी भी जामण को न्ही भांगी
हूरज पूजा की साड़ी भी खूंटी पर न्ही टांगी
आज हवेरां तक नावण ने नेग चुकायो थांको
अरे लालजी अणछतां हो गेलो पकड्यो क्यां को
म्हारा गेंद हजारी रे
म्हारा लाल हजारी रे
जामण आंसू ढारे रे
म्हारा कुंवर कन्हैया रे

कई तो आया ने कई चाल्या कई देखी दुनियां ने
कई तो माँ की गोद बसई ने लाड़ कर्‌या कई माँ ने
हेंबूका हूका रेईग्या है नवा बिछाणा थां का
पीहर का लुगड़ा आंसू में आला करद्‌या माँ का
या मत रीत चलावो रे
रथ पाछो पलटावो रे
म्हारा फूल हजारी रे
म्हारा गेंद हजारी रे

आंखां ही आंखां में व्हाला वातां कूण करे रे
वगर अरथ की वातां पर अब हामी कूण भरे रे
बड़े परोड़े काची नींदा बोलो कूण जगावे
कूण कांचरी को अणमातो अमरत अबे खुटावे
यो अमरत कें मेलूंगा रे
के पाछो कसूरू दूंगा रे
म्हारा गेंद हजारी रे
कुण पे रे ई कड़ा कड्डूल्यां कूण खूंगारी पे रे
भिड़े पलाणा कूंण काठ का हाथो घोड़ा घेरे

सांझ संगाती लेई ने बरांती कूण अबे निकरेगा
बाँझ पड़ोसण छाने छाने लट कण की कतरेगा
कण ने सात दजावेगा
आसा कूण पुरावेगा
म्हारा गेंद हजारी रे
म्हारा लाल हजारो रे

विन गुम्बज को मन्दर रेईगी म्हू पापण दुखियारी
अंणपूजी मूरत कोसी ली परबस उबो पुजारी
वगर चांद की पूनम रेईगी वगर दीवे दीवारो
चूंप लुटीगी हाय चुड़ला की टोली वेईगी भारी
ममता गूंगी वेईगी रे
जातरा मंहगी वेईगी रे
म्हारा गेंद हजारी रे
म्हारा लाल हजारी रे

भाटे भाटे जईने अब म्हूं कण ती धोग देवाडूं
रतजगा में पुरबज गाताँ गोड़े कणे होवाडूं
वरत वास की केण्याँ में हुंकारो कूण भरेगा
मन्दर जातोवेराँ में अब लारे कूण पड़ेगा
पालब कण पकड़ेगा रे
उठ उठ कण पड़ेगा रे
म्हारा गेंद हजारी रे
म्हारा लाल हजारी रे

कूण तोतली बोली में दादी ती राड़ करेगा
कण का बलद्या दादाजी को लीलो बाड़ चरेगा
मामेरा का झगल्या टोपी पांछा कसरूं दूंगा

अम्बा की पूजा एकल्ली कसरूं हाय करूंगा
झूंठो कूण रिसावेगा
जामण कणे मनावेगा
म्हारा लाल हजारी रे
म्हारा गेंद हजारी रे

काल जणी ढूली ऐं परण्या व्हा माचो ढारी री
घूरा का घर की मेड़ी में व्हा दिवलो बारी री
ओ सायर वनड़ाजी वण की टीली कसरूं भागूं
काले दी जो सासू साड़ी पाछी कसरूं माँगूं
तमोरी विड़ला लईर्‌यो रे
लखारो पाछो जईर्‌यो रे
म्हारा लाल हजारी रे
म्हारा गेंद हजारी रे

सूरज किरण तक ती कुम्हलातो थो जो लाल हजारी
अगन पछेड़ी आज ओढ़वा की करर्‌या है त्यारी
कोई तो ढाबो अणी पंथी ने अरे कोई तो हमझावो
म्हारी न्ही मानेगा ढेठो कोई तो हाय मनावो
म्हारी ऊमर लेईलो रे
या जाती जिनगी देई दो रे
म्हारा लाल हजारी रे
म्हारा गेंद हजारी रे

अरे विधाता थारे आँगण दूंगा रोज बुहारी
ऐंठा बासण थारा कुटम्ब का माँजेगा दुखियारी
भले उजाड़ी दे रे दाता तू सब अंबा म्हारा
छोई उगई दे खेर खेजड़ा और धतूरा कारा
म्हारो दिवलो बरवा दे

थारी गऊ ने चरवा दे
म्हारा लाल हजारी रे
म्हारा गेंद हजारी रे

थाँ पर वारी ने पी लेती सब दुखड़ा दुनियाँ का
हाय म्हने भी लारे लेईलो पूत जीवेगा थाँ का
लाल पगाँ म्हू' थाँके अतरो तो हमझई दो
थाँ को गरो भारईर्यो वे तो आँखाँ में ही केई दो
म्हू' छाती कणे लगऊंगा रे
म्हू' कण के काँधे जऊंगा रे
म्हारा लाल हजारी रे
म्हारा गेंद हजारी रे

लखारा

पियूजी की गलियाँ में आजे रे लखारा
सैंया जी की गलियाँ में आजे रे लखारा
चुड़ला लावजे रुपारा रुपारा
राजाजी की गलियाँ में

गाम का मोटा मन्दरिया के मेरे
गाम वारा जें आड़ी गइयाँ उछेरें
छोटा छोटा ढार्‌या वारो रुपारो बगेलो
चंपला की छाया रेटे अई ने करजे हेलो
डावे आड़ी मन्दर का तुलसी का क्यारा
जीमणे दिखेगा मज्जित की मीनाराँ
पियूजी की गलियाँ में आजे रे लखारा

गोरी गोरी बहियाँ म्हारी चूड्याँ लावजे राती
होक नें बतऊंगा व्हा कूटेगा छाती
होकड़ली म्हारो घणी नखरारी
नकटी नसेड़ी जावे रे उधारी
नैण वणी का घणा हत्यारा
चूड़ियाँ के बाँधवा ने लाजे डोरा कारा
राजाजी की गलियाँ में आजे रे लखारा

केसर्‌या भी लावजे हरियाली लावजे
कारी बिन्दी वारी धोरी भूली मती आवजे
पिया मन भावे असा रंग तू मिलावजे
तिरंगा की याद अईजा असरु पेरावजे
देस का बैरी कदी देखे हाथ म्हारा
जाणी जावे ई हाथ को न्ही हुंवाराह
पियूजी की गलियाँ में आजे रे लखारा

चुड़ला का निरखारु निखेगा म्हाने
पाणीड़ो म्हूं जऊ जदी देखे छाने छाने
पाणत करी ने कूड़ा ती पाछी अऊगा
वटा तक तो बहियाँ कणेई न्ही बतऊंगा
आरती की वेराँ राते वाजेगा नगारा
जवरी ती देखो लेगा रूप का रखवारा
पियूजी की गलियाँ में आजे रे लखारा

चुड़लो चिराऊं लागू रम्भा सरीखी
चाँद ने सूरज की ऊमर पावे म्हारी टीकी
बालकवि खेलें गोदी में आसा
आँगणाँ में म्हारे रोज वटे रे पतासाँ
यूं मत जाणजे मोलऊंगा उधारा
मोल चुकावे म्हारा नणदोई का हारा
पियूजी की गलियाँ में आजे रे लखारा

कोयल ती

थारा गीत कोयलिया म्हारा मन ने कड़वा लागे रे

सूनी आंख्यां रात दिन देख्यां करूं अकास
आती व्हे ने पूंछ लूँ नाक्यां करूं निसांस
सूनो म्हारो पालणो कणे लड़ाऊं लाड़
म्हारा पियू का वंश पर कद वरसे आषाढ़
थारी लोरी हांझ हवेरां बैरण गड़वा लागे रे
थारा गीत कोयलिया म्हारा मन ने कड़वा लागे रे

चोपायां में मांदकी की लागी रेलमपेल
भरी दुपेरां लूटल्या मरग्या म्हारा बैल
एक तो म्हारो सायबो सांमद को लाचार
दूजे सवेरां रोज ही घर अईजावे सहूकार
कर्जो लाचारी में घासपूस जूँअ वढ़वा लागे रे
थारा गीत कोयलिया म्हारा मन ने कड़वा लागे रे

आज रूप का बाग में मदन लगई दी आग
ओढ़ बसन्ती ओढ़नी कौई खेली रीं फाग
पणघट ती चोपाल तक उड़र्‌यो अबीर गुलाल
डफ और चंग की चोट पर कूटईरी करताल
म्हारा पियूजी की खाली थाली में प्याला लड़वा लागे रे
थारा गीत कोयलिया म्हारा मन ने कड़वा लागे रे

कोयल अब मत गावजे तू धरती पर गीत
धरती का भगवान ने पलटी दी है रीत
आधी रोटी खावता पांच जणा मिल बैठ
आज मनक का मास ती मनक भरीर्‌या पेट

भूखा अन्दाता का हल धरती में अड़वा लागे रे
थारा गीत कोयलिया म्हारा मन ने कड़वा लागे रे

मीठा थारा गीत ई अठे सुणेगा कूण
अब तो खाटी खांड है ने मीठो लागे लूण
महलां पर से देखजे दीखेगा शमशान
मनक मरे तो लाश ने चाखे है इन्सान
अब तो दिन ऊग्यां धरती पे अंधारो पड़वा लागे रे
थारा गीत कोयलिया म्हारा मन ने कड़वा लागे रे

लाली चाली सासरे

अरे जमई सा भला पधार्‌या लाली ने लेई जाजो
म्हारो सन्देसो थी भी सुणजो समदण ने समझाजो

नौ नौ वजां अठे उठती थी धड़ी धान पिसवाजो
खेंच कानड़ा खूब वदाजो कई शरम मत खा जो

पाव तेल माथा में चावे घर में मती बसाजो
चोट्यां वोट्यां परी काटजो मिन्ड्यां बोर गुंथांजो

आधी नागी फरी अठे तो लंहगो व्हां पेराजो
फाटे मूँडे फरती फरती छेड़ो वठे कड़ाजो

स्नो पावडर यां खूब बगाड़्यो गोवर वटे नकाजो
ज्यादा गडबड़ करे वटे तो डन्ट्या रोज टिकाजो

कुर्सी टेवल यां तो तोड़ी वटे मती तुड़वाजो
गदरा पर या खूब लोट ली धरत्यां ही होवाजो

चाय रांड की याद करे तो चक्कर में मत आजो
ज्यादा नखरा करे वटे तो चोटी पकड़ घुमाजो

मेट्रिक पास करीने आई या मत मन में लाजो
हांझ हवेरां घर का वर्तन अण से खूब मंजाजो

सिनेमा ने नाटक फाटक बिलकुल मति वताजो
राती धंधो आवा लागे असो काम करवाजो

लाड़ प्यार में वगड़ी वेटी थें मत लाड़ लड़ाजो
और बारणो हग्गा बाप को पाछो मती बताजो

आँख काढ़ता री जो अण पर मूँडे मती लगाजो
अतरा पर भी न्हीं हुदरे तो सव होरी में जाजो

मनक मानवी

मनक मानवी जटाँ तलक है तरसा मनकाचार का
कोई वतावो कसरूं गऊ म्हूं गीत मुहब्बत प्यार का

म्हारे भी एक लूणी वरण्यो नरम नरोगो जिवड़ो है
थी हांची न्ही मानोगा पण म्हारे भी एक पिवड़ो है
आधी आधी रात म्हने भी मीठा सपना आवे है
म्हारी गली में भी कोई ग्वालणा रसिया रोज हुणावे है
म्हारी बारी में भी चन्दो चौड़े धाले आवे है
पीपल कोई म्हारा नाम ती रोज पूजवा जावे है
तुलसी क्यारे रोज झांझ कां दिवलो म्हारा नाम को
मेली ने कोई फल पावे है सौरमजी का स्नान को
अतरा पर भी दरसन दुरलभ भगती ने भरतार का
कोई वतावो कसरूं गऊं म्हूं गीत मुहब्बत प्यार का
मनक मानवी जटा तलक है

म्हारे जसा हजारा हिवड़ा आज अटे लाचार है
वात वात में ऊंची मींतां पग पांवडे त्यार है
मनक मनक ती मिलवा चाल्यो मनक फरोग्यो झट आड़ो
तो क्यो पग नीचे न्ही आवे जण पेलई खुद जा खाड़ो
वरबरता म्हारा गीतां में दीखे आपने लाय है
लाय वाय म्हा कोन्ही वीरा फकत कलम की हाय है
छेर छेकला रेला देखूं कोन्ही म्हारो काम यो
निन्दक को तो छोई की जो पण कोन्ही म्हारो नाम यो
कड़वा फल पांती में आया म्हारे अणी ससार का
कोई वतावो कसरूं गऊं म्हूं गीत मुहब्बत प्यार का

म्हारी आंखां ती देखे कोई आज अणी संसार ने
एक वाप का जाया उपन्या भर्‌या पुर्‌या परिवार ने

एक जमीं पर पग न्हो मेले मेले तो कुम्हलावे रे
एक जमीं पर पेट लवूरे पण न्ही पेट भरावे रे
आज पसीना का पणघट पर तरसां मरे मजूर है
पापण पूँजी पाणी पी गी पण तरसी भरपूर है
चांदी की बांदी दुनियाँ का माटी लाख करोड़ है
अणे रंडापो अई न्ही जावे लागी री या होड़ है
जादव जादव लेई डूव्या जद जादूड़ा की द्वारकां
कोई वतावो कसरूं गऊं म्हूं गीत मुहव्वत प्यार का
मनक मानवी जटा तलक है

जद भूखा करसाण दिखे ने दिखे वणां की डावड़ियां
जद परबस मजदूर दिखे ने दिखे वणां की कामणियां
जदी पसीना का समदर पर सोना को सूरज दीखे
जदी आरती के उजियारे माटी की मूरत दीखे
दानतहीण पणो कंगाली और गुलामी लाचारी
भूख गरीबी जोर जुलम और दूज दिखे या हत्यारी
म्हारी कलम को जी घवरावे धरम कठे ईमान कठे
ओ भाटा का भक्तां बोलो मनक कठे भगवान कठे
बोलो बोलो थाने सोगन है अपणा अवतार का
कोई वतावो कसरूं गऊं म्हूं गीत मुहव्वत प्यार का
मनक मानवो जटा तलक है

चार घड़ी के बलेजगत में जणे मोकल्यो राम ने
मनक जात की मुश्किल करदी वणी दंत का काम ने
छेड़ करे हगतां दूजा का नवरी आंख वतावे रे
काम करम सब करे काजऱ्या पर उजरो इतरावे रे
कतरो मोटो वणे आपमें यो कतरो पोमावे रे
जीवन का आधार घात में यो बारूद विछावे रे

नजर पराया जोबन पर ने नजर पराई थारी में
मनक पणां का मुकुट लुटईग्या मनकां की रखवारी में
कारा करद्या जदी मनक ने बागा वार तेवार का
कोई दतावो कसरूं गऊं म्हूं गीत मुहब्बत प्यार का
मनक मानवी जटा तलक है

आधी आधी रात म्हूं भी जागूं हूं ने रोऊं हूं
याद कणा कई आवे है ने भरी जवानी खोऊं हूं
चांद म्हने भी याद देवाड़े बालपणा की प्रीत की
नौलखा तारा सौगन दे है म्हने रसीला गीत की
मन तो म्हारो भी रोवे के गीत लिखूं म्हूं प्यार का
पणघट जाती पणिहारी का नवा नवा सिणगार का
पण जद ऐरे मेरे देखूं हपना हगरा टूटी जा
आधी राते हाय कणी की धीरज म्हारो लूटी जा
लाख नटे जिवड़ो पण फूटे गीत राड़ तकरार का
कोई वतावो कसरूं गऊं म्हू गीत मुहब्बत प्यार का
मनक मानवी जटा तलक है

आप जाणो

म्हारे से लेवाय कोन्ही नाम आपको
अब आप जाणो और जाणे काम आपको
ओ सा म्हारे से लेवाय कोन्ही

आठ आठ पहर म्हने याद आओ हो
एक एक कण में आप मुस्कराओ हो
जद विन बुलायां लाख घरां आप जाओ हो
तो म्हारो मन भी वेगा ही मुकाम आपको
अब आप जाणो और जाणे काम आपको
ओ सा म्हारे से लेवाय कोन्ही

दुख परायो जाणी लैणो मोटी बात है
मेटणो न्ही मेटणो या कण के हाथ है
पण कान दीजो माफ करजो कड़वी बात है
के कोई ने देखी ने डिगीग्यो राम आपको
तो म्हारे से लेवाय कोन्ही नाम आपको
ओ सा म्हारे से लेवाय कोन्ही

पांच तार की या देई ने फाटी चादरी
बांध दो खलक मुलक की अण में गांठड़ी
जावणो है हाट हाट और हाटड़ी
ने सूत तो है एक दम नकाम आपको
तो आप जाणो और जाणे काम आपको
ओ सा म्हारे से लेवाय कोन्ही

यो भी छोड़ूं ऊभी छोड़ूं आपके वले
मन ने यूं मनऊं के मीत आज अई मिले
पण आप ही बतावो काम कस्तरूं चले
के आपसे तो छूटे कोइन्ही धाम आपको

तो म्हारे से लेवाय कोन्हीं नाम आपको
ओ सा म्हारे से लेवाय कोन्ही

आपके वले म्हूं जनम लूं हजार लाख
बिरहा में वरूं ने सदा आली राखूं आँख
अतरा पर भी आपने दया नहीं जराक।
अरे क्यूं करो हो कारो खुद हीं नाम आपको
अब आप जाणो और जाणे काम आपको
ओ सा म्हारे से लेवाय कोन्हीं

जाण्यां वीण्यां अणममझ मतीं केवावजो
या अमीरी कोई और ने वतावजो
आणो वे तो हांझ पैला अई जावजो
म्हूं भी कोई न्ही नाथ कोई गुलाम आपको
अब आप जाणो और जाणे काम आपको
ओ सा म्हारे से लेवाय कोन्हीं

मैंहदी मती लगाव

मेंहदी मती लगाव ऐ म्हारी बैन रूपारा हाथां में
म्हारी बैन हुंवारा हाथां में
तू मेंहदी मती लगाव

जावद की मेंहदी घोरी ने बैठी है गोरी गोरी रातां में
जाणुं हूं थारा दो ई हाथ है थारी नणदी का हाथां में
जिवड़ो थारो अरझी र्यो है तरे तरे की भांतां में
पण खम्मा म्हारी बैन
वाटको परमों तो हरकाव
तू मेंहदी मती लगाव ऐ म्हारी बैन रूपारा हाथां में

गाम गोयरे आजादी की अई पोंची है असवारी
देख देख ने करे अचंभो भोरा ढारा नर नारी
गाव वधावा चढ़ा चढ़ावा अबै परीक्षा है थारी
हाथ पकड़ अणी आजादी को
घर घर में पोंचाव
तू मेंहदी मती लगाव ऐ म्हारी बैन रूपारा हाथां में

थारा देस का नवा महल की नींव भरवा लागी रे
अणी नींव के मुट्ठी मुट्ठी मेहनत सबती मांगी रे
अणी घड़ी में पड्यो सेज परदेख थारो बड़ भागी रे
छैल भमर ने झकझोरी ने
नारी धरम निभाव
तू मेंहदी मती लगाव ऐ म्हारी बैन रूपारा हाथां में

जगां जगां कामे लागीग्या थारा जामण जाया रे
मेहनत को मद माथे चमके मस्ती में मस्ताया रे

होठ हुकावे पाणी चावे चावे ठंडी छाया रे
जलझारी देई आ वीरा ने
पालव छन्यो छवाव
तू मेंहदी मती लगाव ऐ म्हारी बैन रूपारा हाथां में

मेहनत को मोरत अईग्यो है सोरत वेईगी है भारी
आज पसीनो अणपूजो है मांगी र्‌यो पूजा थारी
तोक पावड़ो तोक कुदारी पग पग करदे पंतवारी
मेंहदी फूंदी काजर में
यूं मोरत मती चुकाव
तू मेंहदी मती लगाव ऐ म्हारी बैन रुपारा हाथां में

खेत खेत और नद्दी नद्दी मगरे मगरे जाणो है
दिशा दिशा में दारिद्द‌र ती जगी जुद्ध मचाणो है
हाथ हथेरी में छाला को अद्‌भुत व्याव रचाणो है
खुशहाली की लाड़ी लई ने
पेलां सास केवाव
तू मेंहदी मती लगाव ऐ म्हारी बैन रूपारा हाथां में

थारा दन आया है थारी रातां अम्मर रेणी है
खूब रचेगा थारी मेंहदी पण दो वातां केणी है
अपणी सुध ले वण से पैलाँ जामण की सुध लैणी है
न्हीतर सब झूंठा है थारा
रकड़ी रतन जड़ाव
तू मेंहदी मती लगाव ऐ म्हारी बैन रूपारा हाथां में

विनोबाजी ने नोतो

वे गो अईजा रे म्हारा सन्त विनोबा
निरधन रोवे रे
वे गो अईजा रे

मरे पचे ने धान कमावे पेट भरे दुनियां को
ऊ धरती को पूत कमाऊ बेटो राणी मां को
रे बाबा बेटो भारत मां को
लगा बारकां ने छाती ती भूखो होवे रे
निरधन रोवे रे
वे गो अईजा रे म्हारा सन्त विनोबा

पगाँ जातरा करो जातरी व्याऊं पेटे दुख देवे
धरती माँ की मांग को हिंगळू थाराँ पगां ती बैवे
रे बाबा थारां पगां ती बैवे
चुनरी फाड़ पग पाटा बाँधूं जद सुख होवे रे
निरधन रोवे रे
वे गो अईजा रे म्हारा सन्त विनोबा

गया बरस कामण में उपण्यां गहूं की लापसी राधूं
बागड़िया नारेर वधारूं गोरी गोरी चटकां मिलादूं
रे बाबा दूध्याँ दूध्यां चटकाँ मिला दूं
हर्या मूंग ने व्हाला व्हाला चंवरा गेलो जोवे रे
निरधन रोवे रे
वेगो अईजा रे म्हारा सन्त विनोबा

सकरकन्द को खेत खुदाऊं बाफूं ताता पाणी में
भैंस बाकड़ी तुरत दुहाडूं दही जमाऊ मथणी में

रे बाबा दही जमाऊं मथणी में
रूच रूच खावे थारी दाड़ी भरावे म्हारो भमर्‌यो धोवे रे
निरधन रोवे रे
वे गो अईजा रे म्हारा सन्त विनोबा

हिलमिल म्हाने सड़क बणई दी पगडंडी मत आजे
जण का दुख से तू दुबरो है वण की पीर मिटाजे
रे बाबा वण की पीर मिटाजे
देर करी तो जमीं को भूखो सत पत खोवे रे
निरधन रोवे रे
वेगो अईजा रे म्हारा सन्त विनोबा

आयो बुळावो

धन दौलत और महल अटारी दुनियाँ का ई ठाठ
मन पंछी सब छोड़ने चल प्रीतम की बाट
रूप जवानीदेखने रोके आज हजार
पियू बुलावे प्राण ने तो कोई न्ही रोकन हार
पी मिलवा को आयो बुलावो
आज पिया का चाकर आया
म्हाने झट पोंचावो
पी मिलवा को आयो रे बुलावो

जां के संग में खैल्या कूद्या व्हाने खबर पठावो
जाती वेरांमिल लो बेनां आओ बधाई गावो
पी मिलवा को आयो बुलावो

जावो बजाजां के चूनर लावो और म्हाने ओढ़ावो
माँग सिन्दूर नैण में काजर सतरंग रूप सजावो
पी मिलवा को आयो रे बुलावो

पहराई ओढ़ाई ने मोकलो मत कंजूसो लाओ
जामण जायो ने जामण रोवे व्हाने भी समझावो
पी मिलवा को आयो रे बुलावो

चार कहार उठावो डोली बाकी कांध लगावो
पी का नगर की पकड़ो डगरिया म्हाने पंथ बतावो
पी मिलवा को आयो रे बुलावो

आछा री जो बाबुल म्हारा अब मत नीर बहावो
जावे जवानी उतरे पाणी पियूजी से वेग मिलावो
पी मिलवा को आयो रे बुलानो

यो बसन्त है

यो बसन्त है
यो बसन्त है
ठंड गई परदेस तावड़ो लगणे लग्यो जी
बिरहण आंगण लीमड़ली को अग अग गदरायो जी
कारो काग बोलवा लाग्यो कट्यो कट्यो रूखो रूखो
शाह भमरड़ो लग्यो भटकवा तरसो और भूखो भूखो
आंबो मोर्‌यो अमली मोरी बोलै कोयल कजरारी
धूम धड़क्का तो अईगी है ऋतुराजा की असवारी
छै ऋतुआं को राजा आखिर
रूपवान गुणवन्त है
यो बसन्त है
कल्यां खुली ने फूल वणीगी, फूल डील में न्हीं मईर्‌या
कांटा की कंटवाड़ उलांघी तितली भंवरा इतरईर्‌या
धरती की पचरंगी चोली भरी भरी भारी लागे
गध सुगंध असी फेलागी कांटा तक वाला लागे
सारम की जोड़ी दौड़ी रो आला गच्च अडाणा में
आपूड़ी की गंध गजब है ज्वारां का खलिहाना में
अमल कसूंबो पीवा
आँगण अईग्यो औघड़ सन्त है
यो बसन्त है
एक एक कण गावा लाग्यो दसी दिसा रस घोरईग्यो
पणघट जाती पणिहारी को देखो तो मन वोरईग्यो
छैल छवीला नवा डावड़ा टेढ़ा टेढ़ा नारे रे
दो पावंडा चाले जण में दो सो दाण खखारे रे
लेई गुलाल की थारी अईगी राधा भोरी ढारी रे
व्हा कई जाणे
अणो दान की महिमा घणी अनन्त है
यो बसन्त है

लेवा पधार्‌या

भावज काले हांझ कां तवे निकार्‌या दांत
और चली चिन्तारढी म्हने पाछली रात
गरद उड़ी री गोयरे घुघरा की रणकार
दीखे म्हाने आवतां सेजां का सिणगार

भाभी आंगणां में जाओ ढोल्यो ढारजो
आज लेवा पधार्‌या म्हारा सायबा
म्हारी सखियां से गारां गवावजो
आज लेवा पधार्‌या म्हारा सायबा

घरबार लीपो मांडो मांडणा
आया हठीला थांके पामणा
उजरा उजरा व्ही चोखा रंधावजो
आज लेवा पधार्‌या म्हारा सायबा
भाभी आंगणां में जाओ

जीमें तो लाजां मरे पीवजी
भूखा न्ही रेई जा म्हारा जीव जी
म्हारा वीरा ने साथे जिमावजो
आज लेवा पधार्‌या म्हारा सायबा
भाभी आँगणां में जाओ

खेत और खरा पर करे राज व्ही
भाभी थाक्या तका वेगा आज व्ही
घी घर को ही व्हाने खवावजो
आज लेवा पधार्‌या म्हारा सायबा
भाभी आँगणां में जाओ

म्हूं लेवाने आयो यूं केगा कोन्ही
व्ही दो दन ढबेगा फेर रेगा कोन्ही
म्हारा वीरा ने याद देवावजो
आज लेवा पधार्या म्हारा सायबा
भाभी आंगणां में जाओ

मेंहदी लगावो म्हारे माथो नव्हाओ
नावण बुलाई म्हारे रकड़ी गुंथाओ
म्हारा चुड़ला के चूंपा जड़ावजो
आज लेवा पधार्या म्हारा सायबा
भाभी आगणां में जाओ

आज मेड़ी में दिवलो लगावो दरी
म्हारा वीरा की आदत वतावो दरी
चाँद डूबे ने म्हाने जगावजो
आज लेवा पधार्या म्हारा सायबा
भाभी आँगणां में जाओ

चाँद सरीखो वीरो

राजा इन्दर थोड़ो थम जा मत बरसावे नीर
आज भरेगा झोरी म्हारी जामण जायो वीर
म्हूं भारत की जायी परणी ले पूजा को थार
चालो बीरो पूजवाँ राखी बड़ो तैवार
म्हारो चांद सरीखो बीरो रे
म्हूं ओढ़ ओढ़नी पीरो रे
वीरा मंगल गाती आऊं
म्हारा पीहर का उंजियारा
म्हारा चूड़ा का रखवारा
वीरा थां पर फूल चढ़ाऊं

दादाजी ने दूर देस में दी वीरा परणाय
गऊ जाया ने बेटी वीरा जां देवे व्हां जाय
ह्रावण लागो वाट नारवा लागी बारी माँय
वीरो म्हारो पीहर ती अब म्हाने लैवा आय
म्हूं दन दन गणती रे ती
वीरा अन्न पाणी न्ही लेती
वीरा मन कसरूं समझाऊं
म्हारो चाँद सरीखो वीरो रे

भावज म्हारी घणी हठीली जाठू है नखरारी
नणदल व्हाने खोटी लागे तोड़े आसा म्हारी
पीहर में वण के भई कोन्ही वणने बस या धारी
पूनम ह्रावण की निकरी के एक बरस की टारी
म्हारो जीव घणो घबरावे
थाने भावज काँ भरमावे
वीरा राखी कटे वधाऊं
म्हारो चाँद सरीखो वीरो रे

घणा हमझणा मिल्या ओ वीरा म्हारी नणदल का वीर
न्ही आया थी म्हाने लेवा तो वणाँ बंधावो धीर
जाओ मारवण थें ही जाओ कां बरसाओ नीर
राखी अईगी वाट देखता वेगा थाँका वीर
म्हूं वगर बुलाई आई
अबतो मिल लो म्हारा भाई
वीरा दो दन रूं फेर जाऊं
म्हारो चाँद सरीखो वीरो रे

भुवा म्हाने केवा वारा व्हाला व्हाला लागे
निकरो वीरा वैन्याँ अईगी नैग आपणो माँगे
राखी का दो डोरा बांधूं हाथ बढ़ाओ आगे
हिलमिल मंगल गावो भाभी मोल जीव को भागे
म्हारे हिवड़ा ने हार धड़ावो
म्हारे पग पायल पैरावो
म्हूं बन ठण नाचूं गाऊं
म्हारो चाँद सरीखो वीरो रे

चटख चाँदणी

चटख चांदणी चितचोर चाली दूजे देसड़ले
जी दूजे देसड़ले
जागो म्हारा हिवड़ा का हार जागीजाओ सा

चकवा चकवी मिलवा लागा
फूल कमल का खिलवा लागा
रस पीवा की वेरां जावे
जागो म्हारा भंमरा कलियां जावे
कलियां की गलियां में सोई लिदा जी आखी रातलड़ी
ओ आखी रातलड़ी
जागो म्हारा हिवड़ा का हार जागी जाओ सा
चटक चांदणी चितचोर चाली

नैन रसीला खोलो जी छबीला
गाठा बैठा वेई जावो सोवो मती ढीला
म्हरो मूंडो देखो झट म्हारे रेटे जाणो है
सुसराजी ने न्हावा ने पाणी चढ़ाणो है
ऊबी दिखूंगा तो सासूजी काढ़े आंखड़ली
औ काढ़े आंखड़ली
जागो म्हारा हिवड़ा का हार जागीजाओ सा
चटख चांदणी चितचोर चाली

आप ती तो म्हूं हऊ जो तारो ऊग्यां जागीगी
धान पीस्यो पाणी लई ने चूल्हा दोरी लागीगी
छाछ बिलोई म्हाने कचरा काढ्या
दूध निकार्‌यो वाछरू धवाड्या
छाणो थेपी ने कीदी वायदो जी पिया हांपड़ली
ओ जी हांपड़ली

जागो म्हारा हिवड़ा का हार जागी जाओ सा
चटख चांदणी चितचोर चाली

चूनरी ओढ़ी ली करली चोटी
डाबा में दाबी दीदी ऊनी ऊनी रोटी
काजर घाल्यो हिंगलू लगायो
चूल्हा ऊपर दूध चढ़ायो
आपकी गादी में म्हारो शीश लेई ने भरदो मांगड़ली
ओ जी मांगड़ली
जागो म्हारा हिवड़ा का हार जागीजाओ सा
चटख चांदणी चितचोर चाली

उठतां ही ने धरती के धोक दो जी रसिया
माता पिता ने नमो मन बसिया
दातण मोड़ो न्हाओ नखरारा
कर लो कलेवो कुड़े जावा वारा
पांगाँ बाँधी ने काच में मूंछाँ वाँकड़ली
ओ मूंछाँ वाँकड़ली
जागो म्हारा हिवड़ा का हार जागी जाओ सा
चटख चाँदणी चितचोर चाली

उठी जाओ न्हीतर देखो पाणी छाँटूं गा
फेर भी उठोगा तो नाक नीचे काटूंगा
तब चलाऊंगा गरगली म्हूं सासूजी ती कूंगा
घी न्ही घालूगा गेहूँ की रोटी न्ही दूंगा
तावड़ा में उठे वण की नार पिया रेईजा बाँझड़ली
ओ सा वाँझड़ली
जागो म्हारा हिवड़ा का हार जागीजाओ सा
चटख चाँदणी चितचोर चाली

हार्‌या ने हिम्मत
(पं० जवाहरलाल नेहरू की मृत्यु पर एक रचना)

भरी रे दुपेरी में सूरज डूब्यो
वेईग्यो घुप्प अंधारो रे राम
तो मन का दिवला संजोवो म्हारा संगवी
कर लो फेर उजारो रे राम

धरती को धीरज धक धक धूजे
गगन वसीका ताणे रे
इंडो फूटीग्यो टींटोड़ी को
जिवड़ा की जिवड़ो जाणे रे
तो बीती बिसारो ने धीरज धारो
यूं मती हिम्मत हारो रे राम
मन का दिवला संजोवो म्हारा संगवी
करी लो न्ही फेर उजारो रे राम
भरी रे दुपेरी में

आंबा लगईग्यो ने हांटा उगईग्यो
कांटा का नखल्या तोड़ीग्यो
भूखा ने धाणी ने गूगा ने वाणो
देई ने हठीलो पौढ़ीग्यो
या तितली पे बिजली पड़ी अणवी ती
गायां ने छोड़ीद्यो चारो रे राम
तो मन का दिवला संजोवो म्हारा संगवी
करीलो न्ही फेर उजारो रे राम
भरी रे दुपेरी में

मन्दर रोवे ने मज्जित रोवे
रोवे है गुरुद्वारा रे

गिरजाघर का आंसू न्हीं टूटे
रोवे धरम हजारां रे

मनकपण ने नींदड़ली अईगी
बेईग्यो बन्द हुंकारो रे राम
तो मन का दिवला संजोवो म्हारा संगवी
करीलो फेर उजारो रे राम
भरी रे दुपेरी में

तीरथ अपणो तै करीग्यो है
जग ने मोवणहारो रे
दरसण करवा ने पाछे अईर्‌यो
आखो ही जग दुखियारो रे
पाछे वारा की पीड़ा जाणो ने
आगे पंथ बुहारो रे राम
मन का दिवला संजोवो म्हारा संगवी
करीलो न्ही फेर उजारो रे राम
भरी रे दुपेरी में

पग पग पर पंतवार्‌या वणई ने
पंथ वणईग्यो पाको रे
सत का सरवर और सरायां
बांधीग्यो बेलीं थांको रे
अब कांधा की कावड़ छलको न्ही जावे
बिछड़े न्ही संग यो रुपारो रे राम
तो मन का दिवला संजोवो म्हारा संगवीं
करलो न्ही फेर उजारो रे राम
भरी रे दुपेरी में

वेगा वेगा चालो तो पथ कटेगा
रात कटेगा अंधारी रे
आंसूड़ा पोंछो तो आंखा में उतरे
पूनम की असवारी रे
ठैठ ठिकाणे पोंछी ने अपणा
कांधा को बोझ उतारो रे राम
मन का दिवला संजोवो म्हारा संगवी
करी लो न्ही फेर उजारो रे राम
भरी रे दुपेरी में

एक असते है तो एक उगे है
मत यो नेम बिसारो रे
सूरज डूब्यो तो चांद उगेगा
न्ही तो उगेगा तारो रे
नछंग अंधारो कदी भी न्ही रेगा
पूरब आड़ी ना रो रे राम
मन का दिवला संजोवो म्हारा संगवी
करी लो न्ही फेर उजारो रे राम
भरी रे दुपेरी में

हीया होनी रुपारी

हाय कसी पीड़ा खटकीरी जोद्धा थारा हिवड़ा में
फरे एकलो लेईने पोरो उणियारो
मुरझईगी सरवर में व्हा शैवालण जणा कणी घड़ी
और पँखेरू गावे कोन्ही गीतड़लो कामणगारो

हाय कसी पीड़ा खटकीरी जोद्धा थारा हिवड़ा में
जो तू अतरो लटक्यो लटक्यो दुबरो दुबरो देखावे
खेतां में की हाक कटी ने धान घरां में पौचीग्यो
ताली की कोटर में दाणा धानचून का न्ही मावे

देखी र्‌यो हूं थारो मुखड़ो जणे कमलणो घायल है
जणे ताब में तपी तपी ने नरम पांखाड़्यां कुम्हलईगी
गालां पर ती ऊनो पसीनो टप टप थारे चूवे है
पल पल मुरझातो जावे ने काया थारो हूकईगी

म्हने मिली थी एक डांवड़ी लीला मुलक रुपारा में
भर जोबन में ऐसी लागे जणे परी की जायी थी
लम्बा लम्बा केश वणी का ढबे नहीं पग थरक थरक
कांकड़ली आंखड़ल्यां जण में मदमाती रतनाई थी

फुलड़ा की एक मारा पोईने माथे वण के गूंथी दी
वाजूबन्द बणायो वणके फूल कंदोरो महकारी
प्यार भरी एक मादक तिरछी चितवन म्हारे पर न्हाकी
और भरी ली मीठी मोठी एक वणी ने सिसकारी

म्हारा अबलक घुड़ला ऊपर म्हने वणी ने बैठाई
आखो दन भर म्हने और तो कई भो न्ही नजरां आयो
कां के वणने झूम झूम घुड़ला पर यें वें नमी नमी
जीव भरी ने किन्नरियां को मीठो गीत घणो गायो

मों लई ने द्या घणा हत्रादू फत्र मीठा मोठा
और रसीला कन्द मूल ने वन को हेंत हिया भायो
बोली एक अनोखी अद्भुत बोली में
के थारे ऊपर शुद्ध पवित्तर प्यर म्हने है निछरायो

म्हने वणी का डूंगर का अद्भुत बागां में व्हा लेईगी
और वटे व्हा रोई गैरी ठंडी साँसाँ लेई लेई ने
पचे वणी का रस भीना ओठाँ पर चुम्मा चार जड़्या
म्हने वणी का मिरग मनोहर मोहक नैणां मूदी ने

मों होवई द्यो वटे वणी ने मीठी थपक्याँ देई देई ने
याद हाल तक खटके जण की देख्यो सपनो एक असो
ऊ ही आखर सपनो थो जो देख्यो शीतल परबत का
मोंह मुलक में फैर कदो न्ही देख्यो सपनो म्हने वसो

देख्या कतरई जोद्धा राजा राजकुंवर मोट्यार वटे
गारा जैसा पीरा पट्ट पड़ी ग्या था जोबन धारी
चिल्लाया व्ही थारे ऊपर रूप मोहनी 'न्हाकी ने
दास वणई ने बाँधी लई या हीया हूनी रूपारी

हाँझ पड़्याँ देख्यो के वण का भूखा होठ खुल्या हाल्या
और भयकर सबदाँ में मों चेतायो
जाग्यो म्हूं तो शीतल परबत के ऊपर
मोह मुलक छेटी म्हूं नजराँ आयो

अणी बले म्हू वण बनवासी ऊजड़ बन में वास करूं
फरूं एकलो लैईने पीरो उणियारो
मुरझईगी सरवर में व्हा शेवालण जाणा कणी घड़ी
और पँखेरू गावे कोन्ही गीतड़लो कामणगारो

(जान कीट्स की प्रसिद्ध रचना ला बेले डैम साँस मर्सी
हृदयहीन रूपसी याने निर्मम सुन्दरी का मालवी अनुवाद)

झरामर रातलड़ी

झरामर रातड़ली आंधी अपार
प्राण प्यारा बधु आज करूंगा म्हूं प्यार

जाणे कोई प्रेमी की टूटीगी आस
असरूं आज आकाश छोड़े निसांस
नैना में म्हारे को नी नींद को निवास
रेई रेई ने वाट नारूं खोली खोली द्वारा
प्राण प्यारा बंधु आज करूंगा म्हूं प्यार

दूर कोई नदिया के पैले पैले पार
झाड़ी वारी राड़ी और घुप्प अंधकार
गहरा गहरा वन के वीचे भूली म्हारो प्यार
कई लेवा ऊबा म्हारा हिवड़ा का हार
प्राण प्यारा बंधु आज करूंगा म्हूं प्यार

(गुरूदेव रवीन्द्रनाथ टेगोर की गीतान्जली के एक गीत का अनुवाद)

गीत असा कसरूं गावे

गीत ऊसा कसरूं गावे ऐ रे गुणवान
गूंजे आखी धरती ने गूंजे आसमान

कईज हमझ में न्हीं आवे, करूं कई करूं
हुण्या करूं हुण्या करूं हुण्या ही ज करूं
पाछै पाछै तान के म्हूं भागतो फरूं
प्राण म्हारा वावरा उतावरा है कान
गीत असा कसरूं गावे ऐ रे गुणवान

जगमगावे आखो जगत थारी तान में
या पवन समईगी आखा आसमान में
छटपटाईने आरपार वेई पखाण में
पूर नदी जसी चलो जावे थारी तान
गीत असा कसरूं गावे रे गुणवान

मन तो यूं करे के म्हूं भी थारा सुर में गऊं
लाख होदूं न्ही मले ई बोल क्यां ती लऊं
कंठ ता न्ही फूटे बोल गऊ तो कसरूं गऊं
गावा बले छटपटावे वाचा का पिरान
गीत असा कसरूं गावे ऐ रे गुणवान

हार्या आंसूड़ा ती आला म्हारा गाल है
म्हारे चारीआड़ी थारा सुर को जाल है
ऐ गुणी यो जाले थारो कई कमाल है
फाँद्यो कसा फन्दा में ऐ दयानिधान
गीत असा कसरूं गावे ऐ रे गुणवान

(गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर की गीतान्जली के एक गीत का अनुवाद)

झील

शान्त
गूंगी झील के थी मत अड़ावो हाथा यूं
हा अणी का नीर ने छैड़ो मती
कांकरी मारो मती
पान पत्यां पानड़्यां न्हाको मतो
फूल परभावो मती
और मत छोड़ो अणो में नाव वा नानीक सी
जा के कागद की है
कोई न्ही काठ की
कां के एक पल का खेल में मन आपको मुस्ताय है
पण लहर बणवा में पमीनो नीर के भी आय है

मूलकवि—अलबर्तों द लकर्दा
पुर्तगाल का युवक कवि जन्म सन् १६२८

बसन्त को स्वागत

लग्या पर्‌याँ का मेरा फैर मजीरा बोलवा
किरणाँ पाणी में कैसरड़ी लागी पाछी घोरवा
व्हे नें व्हे आयो बसन्त

या गंध फैर छावा लगी
फूलाँ का सन्देसा मादक हवा फैर लावा लगी

पत्ती पत्ती वे मतवारी लगी मस्त वे झूमवा
तो थी जावो म्हारा गीत जगत में घूमवा

म्हारे जसा मिले जतरा भी
थी सबको वन्दन करो
ऋतुराजा की पटराणी को जावो अभिनन्दन करो
बराबरी का सब फूलाँ ने आदर दो
सत्कार दो

पर कली मिली जा कोई काची तो
जतरो माँगे प्यार दो

(मूल हेनरिक हाईने जरमनी का युवा रोमान्टिक कवि)

कागला की कुचमात

दाढ़ी वारा ब्रम्हया ने यो संसार वणायो जण दन ती
गरमी बरखा और ठंड वसन्त बणाई 'ऋतुआँ वण दन तीं
फल फूल फले काचा पाका धरती पर खेती पाके है
सब काम नियम ती चालै है यो नियम कदी न्ही थाके है
पण नियम जणी पर थाकीग्या ऊ जीव मनक केवावे है
यो छन छन बदले अणयावयो यो पल पल बढ़ सवायो है
अण की तृष्णा अण को आशा को अन्त न पार कदी आयो
अण को और अणका भायाँ के सैलाणी जिवड़ो ललचायो
मिल बैठा पांच चतर जिवड़ा अब पंचायत में वात चली
कोई ऐसो काम करो गोठी होदो रे कोई नवी गली

आटा माखन और शहद दूध की रोटी एक वणई न्हाकी
और मधरा मधरा खीरा पर पाँचां ने मिल हेकी न्हाकी
झट एक कागला नें तेड्यो और पग पूजा ने अरज करी
के आप हमारा देवत हो म्हां भगताँ पर है भीड़ पड़ी
थी समरथ हो अमरत वारी किरपा की बार्यां खोली दो

उपकार करो मोटा मालक अमरत की नार्यां खोली दो
या रोटी लेई ने आप प्रभूजी गगन मथारे उड़ जावो
भगवन के पाँ जावो दाताया भेंट जरासी देई आवो
हाल हवाला धरती का थी दयासिन्धु ने केई दीजो
अवसर देखी ने अन्दाता वरदान पाँच ई लेई जाओ

एक माँगणी या करजो के बारई मास बसन्त रहे
जण ती ई रूंख हर्या रे ने ऋतु रोगाँ को भी अन्तर है

दूजो वर यो लैई लीजो के बीज फकत एक दाण पड़े
बस खती रोज निपजती रे जूं काटो जूं ही और बढ़े
तो बौणी रोज करपणी को यो फंद कटे जंजाल कटे
तो बौणी और करपणी को यो फंद कटे जंजाल कटे

मेहनती ती छूट मिले म्हाने और न्ही यो आटो दाल घटे

तीजो वर यो लेणो है केई नद्यां पूर नहीं आवे
ई भूत भतार्‍या न्ही आवे यो गगन गढ़ा न्ही बरसावे

चौथो वर यो लीजो के यो राव रंक को भेद मिटे
पूंजी वारा ती निरधन को यो मान गुमान कदी न्ही घटे

और पांचवी वर दाता चतुराई ती मांगी लीजो
के मनक मनकचारा ती रे ने दर्जा में एको दीजो
बेवार करे कोन्ही वोदो राजा हाकम या दरबारी
सुख चैन उड़े और माल झड़े और मौज करे सब नरनारी

यो हुण ने हीदो काग उड्यो और पोंच्यो पेढ़ी प्रभुजी की
रोटी चरणां में भेंट करी ने केणी कई दी धरती की

प्रभुजी पिघर्‍या ने फूल झड्या वातां है ई परमारथ की
मंजूर करीद्या पांच ही वर फरियाद हुणी ली आरत की
और कागा ती क्यो ऐ कागा मनकां की अरज कबूल करी
तू कूच अटा ती बोली ने धरती पर जाजे अणी घड़ी
तू हीदो धरती पर जाजे ने हुकम हुणई दीजे म्हारो
जसरूं ही हुकम हुणावेगा मनकां न मिलेगा फल प्यारो
तू ढब मत जाजे वीचे ही और वात कणा ती मत काजे
जतरो क्यो वतरो ही करजे हुणजे गुणजे गांठा दीजे

बस माथ नमई ने उड्यो काग पांखां में दूणो दम अईग्यो
आंखां में गरब गुमान बढ़्यो और मन पर घणो अहम अईग्यो

म्हूं मोटी हूं हूं उपकारी यो मनक ऋणी है अब म्हारो
लाख गड़ा गूंथ्या मन में और मोटापण को गुन्तारो
अणी ऐंठ ऐंठ में कागाजी गेले ढबवा की आण मूल्या
काण मल्या करसाण मल्या और जूनी जाण पेचाण मल्या

और जई बैठा वणी भाटा पर जां रोज बिराजां करता था
जां एक आंख ती शाणजी अग जा ने निररथां करता था

कदरूपी कारी पनंख ने झटकी ने ठंडी हवा करी
और गरदन टेढ़ी यूं ताणी जाणे के मेहनत करी खरी

भाटा ने पूछो नरमाई ती कई बुध्द प्रसादी आज मिली
जो आज सबूरो अतरी है ने चटखी री है कली कली

कागाजी र्‌या छाना माना और कोरी नाड़ हलई दी बस
मन उबक्यो जसूरूं जीभ हिली परतिज्ञा आण घलई दी बस

भाटो बड़फ्यो थोड़ो अकड़यो कागाजी कां इतरईर्‌या हो
कई पाण लगे थाँ से बोल्या निरधन ने कां तरसईर्‌या हो
अब अणबोल्यो न्ही रेवाणो और बोल्यो काग हुणो वीरा
हीयारो या चौमासो वे थी पड्‌या उघाड़ा रो धीरा
जद पाँण गरे ने माघ ढरे जद दाह पड़े ने खेत बरे
थी दसरूं " ऊमर वितावो हो म्हारा तो झर झर नैण झरे
मने याद आण अईगो अतरे और कागो चिन्ता में डूब्यो
पण फेर कणाँकँई याद कर्‌यो ने शाणाजी ने झट यूं क्यो
के म्हूं प्रभूजी से ल्यायो हूं वरदान अनोखो मनभायो
के ऋतुआं न्ही बदलेगा कदी ने कट जा गा थाँ को कायो
थाने अब ठंड न्ही वाजेगा धांसी और ताव न्ही आवेगा
सब रोग दोग रेगा दूरा ने जनम सफल वेई जावेगा
बस अतरो के णो थो भाटा की मन चाही पूरी वेईगी
और ठंड ताव घाँसी खाँसी अण भाटा की दूरी वेईगी

कागाजी मन में इतराया ने एक रूख पर जई बैठा
ज्या शाणाजी को आसण थो नै फड़ फड़ पींख हिल्या ढेठा
अब मिजमानी वेवा लागी ने आदर ब्या सत्कार मिल्या
वणो रूख करी झट चतराई ने लीला लीला ओठ हिल्या

के कागा भई ऊढे लामा जी ने अमर भभूती दीदी है
थी लागो आज भर्‌या पूर्‌या कई अमर जड़ी पी लीदी है

कागा ने पींख हिलाया बस ईतरईग्यो मन में पोमईग्यो
तो रूख दियो झट औरंभो के मित्र पणो सब के रेईग्या
दो दन ओ जीणो हैं प्यारा म्हारी तो नानी ऊमर है
अरे दुखियारा तो बोलो तो थी समरथ हो कण को डर है

थी राजी तो म्हूं भी राजी बोलो बोलो ओ उपकारी
तो कागो वत्तौ पोमईग्यो ने बोल्यो वचन घणा भारी

ऐ रूंख तू म्हारो गोठी है ने म्हूं गोठीड़ो हूँ थारो
म्हूं हांचो हूं गोठी के वले या जाणे खलक मलक सारो
ऊमर थारी कतरी छोटी के एक बरस भी न्हीं जीवे
महिना दो महिना मलणो वे ने लारे न्हीं खावे पीवे
अतरे आण याद अईगी पण छानो भी न्हीं रेवाणो
बोल्यो के म्हूं लायो हूं वर अजब अनोखो मन भाणो
एक मित्र हुणो अब ती थाने कोई घड़ी घड़ी न्ही वावेगा
बस एक दाण वायां केड़े पीढ्यां पीढ्यां फल खावेगा
हर्‌या भर्‌या निरोगा ने दन दन वदता ही जावोगा
मौज करो म्हारा प्यारा थी दोस्त असो कद पावोगा

केवा में तो वार लगी पर तुरंत असर वर को वेईग्यो
हर साल वावणो पड़तो थो ऊ बीज अबे अम्मर वेईग्यो
वण दन ती जंगल पहाड़ सभी रूखां ती ठट्ठ भरईर्‌या है
अणकाट्यां ही फल देवे है दन रात वद्यां ही जईर्‌या है
कागाजी दूणा पोमईग्या ने मन ही मन में फूजीग्या
पण सपट बंधी जद धरती की तो याद करी ने धूजीग्या
अब चाल्या धरती के आड़ी जां वाट मनक नारी र्‌या था
पल पल परबत सा वेईग्या था पण आसा में टारी र्‌या था

व्ही आस भरी आंखां देखी तो कागा को मन घबरायो
भोंचक रेईग्यो हक्को बक्को ने मन ही मन में शरमायो
खास खास वरदान लुटईद्या भाटा नें ने रूंखां ने
अब मनकां ने कई दूंगा नें कई दूंगा वर का भूखा नें
या आस पुरेगा अब कसरूं तो झूठमाट ही या केई दी
के प्रभुजी ने थां मनकां की फरियाद अरज सब ठुकरई दी
के धरती पर सब ठीक ठाक और काम बराबर वेईर्‌यो है
है सोय सरग तो भी हैली जां मनक आजकल रेईर्‌यो है

या हुणतई मूंडा लटकीग्या और मनक जोर ती चिल्लाया
के यूं कद तेक म्ही जीवा भगवान भला कां पथराया
थीं दीन बन्धू कां केवाया या अरजी पाछी कां फैरी
अणीं जीवा तो मौत भली जमराज लगई जावो फैरी

थोड़ा दन केड़े प्रभुजी के रोटी खावा की मन में अइ
तो भोग लगावा व्ही बैठा नें नेवज में रोटी बुलवइ

पण रोटी तो हूकी गी थी नं काठी भाटो वेइगी थीं
माथा में दो तो लोही बस नाम की रोटी रैईगी थी
कागाजी केणो भूलीग्या के गरम करी ने प्रभु पाजो
रोटी है धरती को भोजन ठंडी ने कामे मत लाजो

भगवान रिसईग्या कोप कर्‌यो के मनकां में ईमान नहीं
वरदानां को यो वदलो है ई लूणखोर इन्सान नहीं
अब सजा मिलेगा मनकां नें झट अन्न देव ने हुकम कर्‌यो
धरती कीं निपज नछंग रोको और हूवई दो सब धान हर्‌यो

वणां दना जौ गेंहू बाजरो धान ज्वार सब हार्कां पर
धरती ती ठेठ मथारा तक लगता था दाणा गदर पदर
जद अन्नदेव ने धान हमेट्यो अईनें धरती माता पर
तो काम छन्यो सो हैलो तो रेईग्यो माथा पर

फेर दूसरी दाण देवता ऊ भी सब लेवा लागा
तो चड़ा चरकला पगाँ पड़्या ने अन्न अन्न केवा लागा
तो अन्नदेव को मन पिघर्‌यो ने छोड़्या ऊपर का दाणा
पण बाकी सब राड़ा रेईग्या यूं मनक मुफत में लूटाणा

अन्नदेव तो कागा की सब बात चड़्याँ ने केई दीदी
और अन्नदेव ने रामकथा सब प्रभुजी आगे गई दीदी
भगवान हुणी ने कोपाया और आँखाँ में लोही छूट्यो
और तुरत बुलायो कागा ऐं और भाग वणी को यूं फूट्यो

के थने मौत मिलणीण अघड़ी ईश्राम घणा वैचाणो
के गर्मी में बसन्त में रोट्याँ का टुकड़ा न्ही मिलणा
हीयारे उगर घुवारे तू काँव काँव करतो फरजे
राते नौ नौ दाण घुवारा में ती धरती पर पड़जे
और कारा पींखड़ा कवद्या अणचाया खर जावेगा
तू हकन वगाड़ेगा सबका ने को हकन्यो केवावेगा
प्रभुजी तो वर एक दाण दे और कणा ने द्या भी था
पग कागजी की गलती से मनकां का हपना वखरीग्या
अब मनक बापणो काम आणा हाथूं हाथ करीर्‌यो है
चड़्याँ चरकज्याँ का दाणा ती पापी पेट भरी र्‌यो है

वणदन ती काणा कागाजी ठुठा पर करे घुवारा है
और वगर घुवारे निकरीर्‌या शाखा का रतन हियारा है
कड़ कड़ बाजे ठंड रात में पड़े घुवारा ती नीचे
और मनक मानवी देखी ले तो रीस करे मुक्याँ भींचे
बारहई महिना खरे लाँखड़ा कारा कदयूपा कतरई
यूं काणा शाणा कागाजी लेई डुव्या मनकाँ की चतरई